भाव विज्ञान

BHĀVA VIJÑĀNA

१००८ श्री पार्श्वनाथ भगवान
(गोपाचल पर्वत, ग्वालियर)

१००८ श्री नमिनाथ भगवान
(सिद्धांचल पर्वत, ग्वालियर)

वीर निर्वाण संवत् - 2534
भाद्र कृष्ण पक्ष वि.सं. 2065 सितम्बर 2008
मूल्य : 10/-
वर्ष : द्वितीय   अंक : पंचम

- व्रती के लिये व्रत ही धन सम्पदा है उसकी सुरक्षा में वह सदा लगा रहता है।
- व्रत रूपी वस्त्रों को साफ सुथरा करने के लिये प्रतिक्रमण साबुन का काम करता है।
- तपस्वी बने बिना यशस्वी बनना संभव नहीं है।
- व्रती व्रतों के नियंत्रण में रहते हैं व्यक्तियों के नियंत्रण में नहीं।
- संकल्प पूर्वक व्रतों का ग्रहण करना साधना का मूल है और तपस्या से सिद्धि उसकी पश्चातवर्ती दशा।
- व्रत संकल्प लेने के पूर्व जितना उत्साह होता है उतना ही उत्साह उसके निर्वाह करने के लिये भी होना चाहिये।
- जो व्रती कर्म काटने में लगे हैं उनका समय कब कट जाता है पता भी नहीं चलता।

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजलि काम्प्लेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2776183

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति की नींव सन् 2004 में संतशिरोमणी आचार्य श्री 108विद्यासागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागर महाराज के आशीर्वाद से हुई। इस समिति के गठन का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे समूह को तैयार करना है जो कि जैन धर्म के कम से कम मूल नियमों का पालन करता हो (रात्रि भोजन त्याग, देवदर्शन आदि)।

यह संस्था जीव दया व अहिंसा के प्रचार के साथ-साथ पशु रक्षा हेतु गौशाला के संचालन में सहयोग तथा विभिन्न नगरों में पाठशालाओं को अपग्रेड करने के साथ-साथ संचालन में सहयोग करती है। यह संस्था गौशाला तथा पशु रक्षा करने वाली संस्थाओं में समर्पित व्यक्तियों का सम्मान भी करेगी। आप भी इस समिति की सदस्यता ग्रहण कर हमारे उद्देश्यों की पूर्ति में सहयोग कर सकते हैं। सदस्यता ग्रहण करने हेतु आपको एक फार्म भरना होगा जिसमें जैन धर्मो के मूल नियमों के पालन हेतु शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करने होंगे। यदि आप इस समिति के कानूनन सहयोगी बनना चाहते हैं तो निर्धारित शुल्क जमा कर यथानुसार सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं।

वर्ष 2004 से अब तक समिति को मुनिश्री आर्जव सागर महाराज द्वारा लिखित लगभग 12 पुस्तकों का प्रकाशन, पाठशालाओं के संचालन में सहयोग तथा मुनि संघों के प्रवास/चातुर्मास के दौरान अनेक सेवाएँ देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अभी हाल ही में भोपाल से **भाव विज्ञान** पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ है इसका पंचम अंक आपके हाथों में है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य जैन धर्म के अनुसार विज्ञान की प्रगति के बारे में बताना है। हमारे मन में आने वाले धार्मिक भावों को विज्ञान से जोड़ने वाली यह पत्रिका विशेष रूप से नयी पीढ़ी के मन की धार्मिक शंकाओं को दूर करने का प्रयास करेगी। समिति के समस्त सदस्यों को भाव विज्ञान पत्रिका नियमित रूप से नि:शुल्क भेजी जाती है।

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
अजित जैन	**अरविन्द जैन**	**अविनाश जैन**	**राजेन्द्र चौधरी**	**डॉ सुधीर जैन**
94256 01161				9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री राजेश जैन रज्जन, दमोह, श्री सुनील कुमार जैन, सतना, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, श्री अजित जैन, भोपाल, **आजीवन सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, **सदस्य : भोपाल :** श्रीमती मना जैन, श्री जिनेश जैन, श्री अनेकांत जैन, **राँची :** श्री योगेन्द्र जैन, श्री अमिल लाल जैन, श्री शांतिलाल वागडिया, जयपुर, **दमोह :** श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरूण सराफ, श्री पदम लहरी।

रजिस्ट्रेशन क्र. MP HIN21331/12/1/2007-TC

त्रैमासिक

भाव विज्ञान
(BHĀVA VIJÑĀNA)

वर्ष द्वितीय
अंक पंचम

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज।

•*परामर्शदाता*•
प्रोफेसर एल.सी. जैन
दीक्षा ज्वेलर्स के ऊपर, सराफा, जबलपुर
मोबा.: 94253 86179

•*सम्पादक*•
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन
एल-75, केशर कुंज,
हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)
फोन-4221458, 9893930333, 9977557313

•*प्रबंध सम्पादक*•
डॉ. सुधीर जैन
प्राध्यापक, शास. महारानी लक्ष्मीबाई
कन्या स्नातकोत्तर महा., भोपाल
मो. - 9425011357

•*कविता संकलन*•
पं. लालचंद जैन "राकेश"
गंजबासौदा

•*सम्पादक मंडल*•
डॉ. सी. देवकुमार, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)

•*प्रकाशक*•
श्रीमति सुषमा जैन
एमआईजी-8/4, गीतांजलि काम्प्लेक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2776183

•*सदस्यता शुल्क*•

परम संरक्षक	11,000/-	रु.
संरक्षक	5,000/-	रु.
विशेष सदस्य	3,000/-	रु.
साधारण सदस्य	1,000/-	रु.

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक	पृष्ठ
1. सम्पादकीय — श्रीपाल जैन दिवा	2
2. मुख्य पृष्ठ परिचय	5
3. अनेकांत एवं स्याद्धवाद — स्वर्ण श्रीपाल	6
4. ध्यान प्रक्रिया — मुनि आर्जवसागर	10
5. अभूतपूर्व प्रभावना की स्वर्णिम यादें — बी.एस. जैन	12
6. सम्यक् ध्यान शतक — मुनि आर्जवसागर	14
7. तीर्थ — श्रीपाल जैन दिवा	15
8. आत्म सम्बोधन — लालचंद जी राकेश	17
9. मुक्ति के योग्य द्रव्य क्षेत्र कालभाव — शिवचरण लाल	18
10. वर्षायोग 2008 एक संकलन	27
11. ग्वालियर नगर में अपूर्व धर्मप्रभावना — नरेन्द्र कुमार जैन	34

लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्यायक्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

चातुर्मास/वर्षायोग का आकाश

- श्रीपाल जैन 'दिवा'

चातुर्मास शब्द दिगम्बर साधु/श्रमण के वर्षा ऋतु में चार माह एक जगह ठहरने के लिए रूढ़ हो गया है। चातुर्मास दिगम्बर जैन आगम की अन्वेषणा है। सूक्ष्म अहिंसा के पालनार्थ साधु के चरण तो रुक जाते हैं परन्तु साधना के चरण तीव्र गति से चलते रहते हैं।

वस्तुत: चातुर्मास शब्द से संयम की सुगन्ध बहती है, तप के ताप से विषय कषाएँ भस्म होती हैं और ध्यान से अमृत रूप शांति झरती है। चातुर्मास श्रावक की श्रद्धा और विश्वास है तो साधु के लिये साधना को ऊँचाई देने का महोत्सव है। चातुर्मास श्रावक के कामना के कंगूरों को तोड़ने की छेनी है तो आकांक्षा के कलशों को फोड़ने का हथोड़ा है। चातुर्मास संयम के सूरज साधुओं के लिये आचरण का आकाश है। जिनके दर्शन कर श्रावक भी उड़ान भरता है उनके अनुकरण के पाँखों को आजमाता है अभ्यास करता है। पेड़-पौधे दूबादि पर जो पैर रखकर न चले, सूक्ष्म जीवों की जो पल-पल रक्षा करे जिनके हृदय घट करुणा से लबालब भरे, वे चार हाथ धरती को देखकर चले ऐसे धरती के महावीर जब ठहर जाते हैं वही चार माह चातुर्मास की संज्ञा धरे। चारित्र जिनके चरणों में रहकर तरे, जिनके हृदय में सूक्ष्म-विराट अहिंसा वास करे, ऐसे आचरण के धनी जब ठहरे चार माह तो वहाँ अहिंसा का मेला भरे। अहिंसा के मेले से अहिंसा निर्यात करे, तो कोई आश्चर्य नहीं है।

ऐसे चातुर्मास ही सबके लिये वरदान हैं सौभाग्य हैं। अन्धों की आँख हैं जिज्ञासु पाँखी की पाँख हैं। ये तो सूखे की बरसात हैं। ये चातुर्मास केवल ज्ञान के प्रकाश हैं। भव्य आत्माएँ ही इस प्रकाश को अपने भीतर तक आने दे पाती हैं।

वर्षावास चातुर्मास का पर्यायवाची है। वर्षावास, वर्षाऋतु में एक जगह वास करने/रहने का अभिधार्थ है। यह दिगम्बर साधु/श्रमण से जुड़ा हुआ समय है। यह ठहराव मंगल महोत्सव है। इस महोत्सव में श्रावक भी सहभागी बनता है और साधना, तप ध्यान की ओर उन्मुख होता है। अशुभ से शुभ की ओर बढ़ने का लाभ उठाता है लोभ त्यागता है-अपने चंचल मन को शुभ चिंतन/शुभ क्रियाओं में लगाता है। शुभ मार्ग की ओर भी उन्मुख होता है। पापों से बचता है पुण्य कमाता है। असाता वेदनीय कर्मों को खिराता है और सुख साता का सद्भाव करता है। इसमें जो मायाचारी करता है वह भारी कष्ट उठाता है। चातुर्मास/वर्षावास का एक पर्यायवाची शब्द वर्षायोग भी है। वर्षायोग में 'योग' शब्द सामायिक का समानार्थी है। सामायिक में 'समय' शब्द आत्मा का पर्यायवाची है। सामायिक याने समय/ आत्मा का ध्यान/सामायिक से आत्म स्वरूप की प्राप्ति होती है। आत्म स्वरूप की प्राप्ति के योग (अवसर) वर्षायोग में खूब मिलते हैं। सफल वृक्ष में जैसे फल लदे रहते हैं ऐसे ही वर्षायोग में आत्म स्वरूप प्राप्ति के फलों की उपलब्धि के योग ही योग हैं। ये अवसर श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका चतुर्विध संघ

को प्राप्त होते हैं। मन-वचन-काय से एकाग्र होने को भी 'योग' कहते हैं। 'योग' से ही ध्यान की स्थिति बनती है। यह ध्यान स्वयं की आत्मा का होता है।

भगवती आराधना में दिगम्बर आचार्य (मुनिराज) के ३६ गुणों में दस स्थिति कल्प बाताए हैं। इनमें पहले स्थिति कल्प अचैलक्य में पूर्णरूपेण नग्नता का समर्थन है। दसवें कल्प 'वर्षायोग' में वर्षा के चार माह में एक ही स्थान पर वास बतलाया है। 'वर्षायोग' में 'दशलक्षण पर्व' भादों सुदी पंचमी से भादों सुदी चतुर्दशी तक मनाये जाते हैं। दसलक्षण पर्व के दस लक्षण धर्म, दस धर्म और 'पर्युषण पर्व पर्यायवाची हैं। उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य ये धर्म के दशलक्षण बताये गए हैं। इन्हीं को दस धर्म भी कहते हैं। वस्तुत: ये धर्म के दस लक्षण हैं ये जहाँ हैं वहाँ धर्म विद्यमान रहता है। उपचार से इन्हें दस धर्म कहते हैं।

उत्तमक्षमा-जब ह्रदय सरल-विमल होकर आकाश हो जाता है जिसमें सब को समाने का अधिकार मिल जाता है, जहाँ सागर से अधिक गम्भीरता-गहनता का सद्भाव हो जाता है, धरती से अधिक सहनशीलता पर्वत की तरह अटल रहती हैं तब वहाँ उत्तम क्षमा साकार होती है। या यूँ कहें राग-द्वेष से मुक्ति की अवस्था में क्रोध का अभाव होता है तभी उत्तम क्षमा का सद्भाव होता है। उत्तम क्षमा मोक्ष का द्वार है।

मार्दव-मृदुता/विनम्रता का सद्भाव है। अहंकार का अड़ने-अकड़ने का अभाव है। अकड़न तो मुर्दे की निशानी है जो अड़ता-अकड़ता रहता है वह तो मरे के समान ही होता है। फूल फल से लदा वृक्ष नम कर धरती को प्रणाम करता है जिसने उसे विभिन्न रस व फल प्रदान किये हैं। यह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी एकेन्द्रिय वनस्पति से ही सीखे मार्दव गुण को।

आर्जव-ऋजुता (सरलता) का नाम है। मायाचारी का अभाव ही आर्जव है जहाँ वक्रता का नामोनिशान नहीं होता। कषायों के विष से आपूरित ऐ ! मन बिल में जाते समय तो साँप भी सरल होकर ही प्रवेश करता है। तू तो मनुष्य है। सरल बन।

शौच-शुद्धता का प्रतीक है। शुद्धता (पवित्रता) के लिये लोभ घातक होता है। लोभ के अभाव में ही शौच सुरक्षित रहते हुए फूलता-फलता है। लोभ-कषाय सर्वाधिक घातक होती है इसीलिए लोभ को पाप का बाप कहा गया है। इससे जो बचे सो निहाल, नहीं तो बेहाल।

सत्य-हित-मित-प्रिय वचन ही सत्य स्वरूप होते हैं। कटु, कठोर, कर्कश, मन दुखाने वाली वाणी असत्य स्वरूप होती है। संसार में अप्रिय वाणी से ही कलह, दंगे-फसाद, युद्ध आदि होते आ रहे हैं। सदैव हित-मित-प्रियता प्रधान वाणी ही सुख-शांति का सद्भाव करती है।

संयम-इन्द्रियों को वश में रखना आसान नहीं है। साधना की शक्ति से सम्भव है। इन्द्रिय संयम विषय कषायों पर लगाम है। चंचल मन के गले का डेंगरा है। प्राणी पीड़ा की अनुभूति और उसे दूर करना प्राणी संयम है। प्राणीसंयम ही अहिंसा का साकार रूप है। अहिंसा की पाठशाला है। संयम ही मुक्ति का द्वार है। संयम बिन सब सून। वीतरागता का मार्ग संयम ही तो है।

तप-इच्छाओं का निरोध तप कहलाता है। सुविधा साधन का नहीं साधना का मार्ग तप है। सांसारिक आशाओं का त्याग तप है। तप आत्मशान्ति का स्त्रोत है। इच्छाओं का अभाव कर देना ही तप है।

त्याग - राग-द्वेषों को त्यागना ही मुक्ति मार्ग है। वीतरागता है। संग्रह और परिग्रह को त्यागने के लिए दान की व्यवस्था है। त्यागने से विसर्जन से ही जीवन स्वस्थ व संतुलित बनता है। मुक्ति मार्ग में त्याग प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है।

आकिंचन्य - शुद्ध आत्मा के लिये मैं 'मेरापन' भी बहुत भारी पड़ता है। अकिंचन एकाकी रह जाये आत्मा की ऐसी स्थिति ही आकिंचन्य है। तभी ऊर्ध्वगामी यात्रा निर्बाध हो पाती है। आत्मा के अतिरिक्त किसी भी विकल्प का भार महान बाधा है। विकल्पों से मुक्त होना ही आकिंचन्य हैं।

ब्रह्मचर्य - आत्मा में रमण करना, विचरण करना ही ब्रह्मचर्य है। यह उच्चस्थिति निश्चय से है। व्यवहार में गृहस्थ श्रावक को एकनिष्ठ रहते हुए संतुष्ट रहना ब्रह्मचर्य है। शक्ति का धर्म साधना में व्यय हो धनशक्ति का संचय दान एवं धर्म प्रभावना में खर्च हो। यह भी ब्रह्मचर्य है। अर्थात शक्ति का व्यय मोक्ष मार्ग में हो।

दसलक्षण धर्म महान महोत्सव है आत्मा की ओर लौटने का, अर्थ से परमार्थ की यात्रा करने का मंगल अवसर है यह पर्युषण पर्व। पर्युषण पर्व समाप्ति पर क्षमावाणी पर्व जो वर्तमान में 'मैत्री-दिवस' घोषित है प्राणी मात्र से मित्रता का भाव रखने का संदेश देता है। मैत्री दिवस जीवन में प्राणी संयम की अहिंसक धारणा को मजबूत बनाता है। समाज में आत्मीयता का बहुमूल्य रस घोलता है वहीं शान्ति का साम्राज्य भी स्थापित करता है।

पर्युषण के पूर्व से 'सोलह कारण व्रत' प्रारम्भ होता है जिससे विशेष तप-त्याग उपवास रूप आत्म शुद्धि का उपक्रम चलता है। श्रावक शुक्ला पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण एकम तक ३२ दिन तक पूजन अर्चन उपवास कर दृढ़ता पूर्वक कठोर साधना श्रावक करते हैं। सोलह कारण भावनाएँ तीर्थंकर प्रकृति के बन्ध की कारण/निमित्त हैं। कौन मोक्षमार्गी तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध नहीं चाहेगा। मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज इस पर्व के महान प्रेरक हैं।

(1) दर्शन विशुद्धि (2) विनय सम्पन्नता (3) निरतिचारशील व्रत (4) अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग (5) संवेग भावना (6) शक्ति तस्त्याग (7) शक्ति तस्तप (8) साधु समाधि (9) वैयावृत्तकरण (10) अर्हद्भक्ति (11) आचार्य भक्ति (12) बहुश्रुत भक्ति (13) प्रवचन भक्ति (14) आवश्यक परिहाणि (15) मार्ग प्रभावना (16) प्रवचन वात्सल्य ये 16 कारण भावनाएँ आत्म विशुद्धि की कारण/निमित्त हैं। इस आत्मविशुद्धि के फलस्वरूप तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होता है।

इस प्रकार वर्षायोग धर्म साधना/आत्म साधना का मंगल महोत्सव है। साधु के मार्ग दर्शन में धर्म साधना से निर्दोष आत्म विशुद्धि का सद्भाव अधिक सम्भव हो पाता है। भव्य जीव ही वर्षायोग में धर्म साधना का लाभ ले पाते हैं। ठीक भी है जो जागे सो पावे, जो सोवे सो खोवे।

।। जय भारत - जय वर्षायोग ।।

मुख्य पृष्ठ परिचय

गोपागिरि (गोपाचल) पर वर्द्धमान मन्दिर

यह जैन मन्दिर म.प्र. के प्रमुख शहर ग्वालियर में गोपाचल पर्वत पर स्थित है, जो जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थकर वर्धमान अर्थात महावीर को समर्पित था। इसका निर्माण 8 वीं सदी के लगभग आम नामक दुर्गपाल की वैश्य पत्नी ने करवाया था, जो जैन धर्म का पालन करती थी। इस मन्दिर में ठोस स्वर्ण से बनाई गई वर्धमान की प्रतिमा थी ऐसा जैन साहित्य में उल्लेख प्राप्त होता है। यह मंदिर आचार्य बप्प भट्ट नामक जैन मुनि के निर्देशन में तैयार करवाया गया था। यह गुर्जर शैली का तीन मंजिला भवन था, जो लगभग 50 फीट ऊँचा व 100 फीट लगभग लम्बा रहा होगा, जैसा की इसके वर्तमान गर्भगृह से आभाषित होता है। सन् 1857 की स्वतंत्रता क्रांति के उपरान्त दुर्ग पर आंग्ल सेना के अधिपत्य काल में इस मंदिर के ध्वस्त भागों को जमींदोज कर परेड मैदान बना दिया गया था। इसके अवशेषों को दुर्ग प्राचीर में रखरखाव के दौरान लगाये जाने के प्रमाण दुर्ग प्राचीर के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। वर्तमान में इस मंदिर के प्रांगण में सिंधिया स्कूल का खेल का मैदान है।

जैन गुफा समूह

नूरसागर से सट कर लगभग 100 सीढ़ियां पहाड़ पर चढ़ने हेतु बनाई गई है, जो ऊपर जाकर पहाड़ी चट्टान पर एक कक्ष में परिवर्तिन हो जाती है, इस कक्ष से पुनः कुछ सीढ़ी चढ़ने के बाद पहाड़ी चट्टानों से काट कर बनाये गये बरामदे आते हैं। यहां पर लगभग 200 मीटर लम्बे क्षेत्र को पहाड़ी चट्टान को काट कर समतल स्थल बनाया गया है। गोपाचल पर्वत की सीधी सपाट चट्टान को काट कर 10 उथली गुफाएँ बनाई गई हैं। इन गुफाओं में बहुत बड़ी मात्रा में जैन तीर्थकरों की पदमासन एवं खड़्गासन मुद्रा में प्रतिमाएँ पहाड़ी चट्टानों को काट कर बनाई गई हैं। ये प्रतिमाएँ सौ से भी अधिक हैं, तथा तात्कालीन मूर्ति कला का सर्वोत्तम उदाहरण है। गुफा चेत्यों के अन्तिम छोर पर पहाड़ी चट्टान को सुंदर प्रस्तर स्त्म्भों से सहारा देकर देवालय का आभास कराया गया है। यहाँ पर लगभग 12 फीट ऊँचाई लिये हुए जैन तीर्थकर नेमिनाथ की खड़्गासन प्रतिमा बनाई गई है। इस प्रतिमा को लगभग 10'×10'×15' आकार के पहाड़ी चट्टान को काटकर बनाया गया है। कक्ष की चारों ओर की दीवारों व छत पर तीर्थकर के जन्म से लेकर निर्वाण तक के सभी कथानकों को अतिसुंदर ढंग से उत्कीर्ण किया गया है इस प्रकार की उत्तम श्रेणी का मूर्तिनिर्माण कार्य इस गुफा समूह को 8 वीं से 10 वीं सदी का स्थान घोषित करता है, जिससे आभासित होता है कि तोमर वंश के पूर्व कछवाएँ व प्रतिहार काल में भी जैन धर्म यहां राज्याश्रय में फलफूल रहा था। यहाँ पर चार कक्षों वाली वर्षाकाल का भण्डारन करने वाली बावड़ी का उल्लेख करना समाचीन होगा ,जिसे एक पहाड़ी चट्टान को काट कर बनाया गया है, तथा वर्षा जल संग्रहण का उत्तम उदाहरण है। प्रशासनिक उदासी के चलते यह सुंदर ऐतिहासिक धरोहर उपेक्षित स्थिति में है।

अनेकान्त एवं स्याद्वाद

स्वर्ण-श्रीपाल (आई.पी.एस.), तमिलनाडू

अनेकान्त-स्याद्वाद पर चिन्तन के साथ पुलिस विभाग की सेवा की संगत में भी आत्मा चिन्तन का स्वभाव इस लेख में दर्शनीय व साधुवाद की पात्रता समादरणीय है। यह प्रताप है परम प्रभावक पू. मुनिश्री आर्जवसागर जी का - सम्पादक

अनेकान्त का अर्थ क्या है?

'अनेक' अर्थात् एक से अधिक; अन्त अर्थात् वस्तु-धर्म; वाद अर्थात् तात्त्विक सिद्धान्त है।

'स्यात्' का अर्थ क्या है?

'स्यात्' के 'कदाचित' 'ज्यादातर होनेवाला' इस तरह से जो कोई अर्थ करते हैं पर वे सब ठीक नहीं है। स्यात् का 'एक कोण से' या 'एक दृष्टि से' - इस प्रकार अर्थ करना ही उचित है।

'वस्तु-धर्म के वर्णन के लिए शाब्दिक-शक्ति पर्याप्त नहीं है।' - यही अनेकान्तवाद का आधार है।

केले का फल 'मीठा' है।

आम का फल 'मीठा' है।

कटहल का फल 'मीठा' है।

'मीठा' - इस एक ही शब्द से केले, आम, कटहल आदि अनेक फलों की मिठास का वर्णन करते हैं। 'मीठा' - यह एक ही शब्द है। पर इन तीनों फलों की मिठास में अन्तर है। तीनों मिठास एक ही प्रकार की मिठास नहीं है। प्रत्येक मिठास, उस-उस द्रव्य के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। केले को ही ले लें। एक तिण्डुकल नगर का केला, दूसरा ई रोड नगर का केला। दोनों केले ही हैं। पर दोनों केलों की मिठास में अन्तर है। क्षेत्र की अपेक्षा दोनों केले ही हैं, पर मिठास की अपेक्षा दोनों में भिन्नता है। हमारे घर में स्थित एक ही केले की कल की मिठास और आज की मिठास में भी अन्तर होता है।

इस प्रकार काल की भिन्नता से मिठास की भिन्नता का अनुभव होता है। फल थोड़ा कच्चा होने पर भी मीठापन में अन्तर आ जाता है।

अतः - द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव

इन चार/चतुष्टय के दृष्टिकोण से 'एक ही द्रव्य के गुण भिन्न-भिन्न हैं' - यही अनुभूति होती है, इन भिन्नताओं के हाने पर भी फल तो एक ही केले का फल है। आधार एक ही है। पर शब्द, द्रव्य, क्षेत्र, काल और स्वभाव से भिन्न है। मिठास को स्पष्ट बताने के लिए शाब्दिक शक्ति पर्याप्त नहीं है। अनुभव से ही इसकी प्रतीति हो सकती है। फिर भी शब्दों से भी अभिव्यक्त करना जरूरी है, अतः स्याद्वाद का प्रयोग कर इस मीठापन को समझाने का जो प्रयत्न किया जाता है वही जैन सिद्धान्त है। उसी को स्याद्वाद, सप्तभंगी के नाम से कहा जाता है।

स्याद्वाद अर्थात् शब्दो की नियति या स्वभाव। यह स्वभाव, सभी वस्तुओं के वर्णन में आधारभूत धागे के समान अन्तर्निहित है। 'सप्तभंगी' से तात्पर्य यह है कि यह एक वस्तु के गुण और विशेषताओं को

अभिव्यक्त करनेवाला शब्द-मात्र है। धागे के साथ संलग्न शब्द फूल के समान हैं।

अनेकान्त इस धागे और फूलों का अन्वेषण करता है। किसी भी धागे को निष्फल या निरर्थक कहकर उसका तिरस्कार नहीं करता है तथा किसी भी फूल को गन्धहीन कहकर उसकी उपेक्षा भी नहीं करता। अनेकान्त का ऐसा ही मनोभाव है।

मनोभाव (मन का सन्तुलन), अनेकान्त है।

शब्द-संयम ही स्याद्वाद है।

शब्दों का सच्चा प्रदर्शन ही सप्तभंगी है।

'शब्द निर्बल हैं - यह कहकर उन्हीं शब्दों से अनेकान्त, स्याद्वाद, सप्तभंगी के सिद्धान्तों का निरूपण या विश्लेषण करने का प्रयास जो मेरे द्वारा किया जा रहा है, उसमें मुझे पूरी सफलता मिलेगी'। ऐसा विश्वास मैं नहीं कर पा रहा हूँ।

तमिलनाडू में एक 'जैन धर्म की क्रान्ति' को करने वाले गुरुदेव परमपूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी के आदेश की पूर्तिस्वरुप ही यह निबन्ध लिखा जा रहा है। संसार और सांसारिक जीवों के रचयिता, आद्य एवं स्वयंभू भगवान कोई नहीं है। सूक्ष्म जीव से लेकर देव, मनुष्य गति के जीव तक में विद्यमान आत्माओं का स्वभाव एक ही है। उस गति की आत्माएँ, फँसे हुए कर्मबन्ध के कारण भिन्न-भिन्न हैं। सर्व कर्मों के नाश से सभी जीव ईश्वर-भाव को प्राप्त कर सकते हैं। जैन सिद्धान्त की इस विशदता में ही 'अनेकान्त' प्रतिभासित होता है।

आज विज्ञान वृद्धि को प्राप्त हो रहा है। आज के विज्ञान में वस्तुओं के बारे में यह बताया जाता है कि वस्तुएँ 'कणों' के रूप में भी परिणमित होती हैं, तथा तरंगों के रूप में भी। 'कण' अपने-आप परिणमित होते हैं। उन्हें परिणमित कराने (या संचालन करने) के लिये बाह्य-शक्ति की कोई आवश्यकता नहीं है। यह आज के विज्ञान का सिद्धान्त है।

प्रत्येक वस्तु को कण-कण में विभाजित कर अन्वेषण करने का न तो समय है और अन्वेषण सामग्रियों को बनाने में भी बहुत ज्यादा खर्च होता है। अतः अधिक विषयों का अन्वेषण न कर, अत्यावश्यक-विषयों का ही अन्वेषण करते हैं। आईन्स्टीन सिद्धान्त का मानना है कि परिणमनमात्र स्वयंपूर्ण नहीं है। इसके लिए एक उदाहरण दिया जा सकता है मान लेते हैं कि दो रेलगाड़ियाँ एक ही दिशा की ओर एक ही गति से जा रही हैं तब दोनों रेल गाड़ियों में बैठे हुए यात्रियों को ऐसा लगेगा कि दोनों रेल गाड़ियाँ एक ही जगह खड़ी हैं। पर गाड़ी के बाहर स्थित लोगों को दोनों गाड़ियाँ तेजी से चलती हुई दिखाई देंगी। इससे यह सिद्ध होता है कि एक कार्य अलग-अलग लोगों को अलग-अलग रूप में दिखाई देता है। आइन्स्टीन का (रिलेटिविटि) सापेक्षता सिद्धान्त, जैन सिद्धान्त के 'अनेकान्त' को पुष्ट करता है।

सापेक्षता (रिलेटिविटि) में आइन्स्टीन ने एक और नया सिद्धान्त बताया है कि कोई भी वस्तु नाश को प्राप्त नहीं होती। ''द्रव्य से शक्ति और ऊर्जा को उत्पन्न किया जा सकता है, तथैव शक्ति या ऊर्जा से द्रव्य भी उत्पन्न होगा।'' अतः हम कह सकते हैं कि द्रव्य (वस्तु) और शक्ति (गुण) एक ही हैं। परन्तु पर्याय अलग है। स्याद्वाद भी इसी का निरूपण करता है।

जैन सिद्धान्त में द्रव्य, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य गुण सम्पन्न हैं ऐसा कहा गया है।

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य परिणमन को-द्रव्य-परिणमन को जैन-धर्म उद्घाटित करता है। स्याद्वाद को पढ़ते समय हमें इस तथ्य को भी जानना चाहिए। हेकल, कार्ल मार्क्स आदि तत्त्ववेत्ता के 'डयलेक्टिक' तत्त्व को हमारे इस तत्त्व ने मार्ग-दर्शन दिया है। थीसिस, एन्टी थीसिस, सिन्थीसिस इत्यादि, डायलेक्टिक तत्त्व में बताए गए हैं। राजनीति के फेरबदल को समझाने के लिए यह तत्त्व सहायक है। आत्मा के परिवर्तन को समझाने के लिए स्याद्वाद उपयोगी है।

सत्यार्थ को सही एवं पूर्ण रूप से स्पष्ट करने के लिए, स्याद्वाद पद्धति के अलावा और कोई उपाय नहीं है। स्याद्वाद-पद्धति दुनिया के लिए एक बहुत बड़ी भेंट है। जिसे जैनधर्म ने संसार को दिया। पर एक बात को हमें स्मरण रखना होगा कि इस स्याद्वाद का प्रयोग, सचमुच पदार्थ को समझने के लिए करना चाहिए। उदाहरणार्थ - गाय है, गाय का बछड़ा भी है। गाय के सींग हैं। पर गाय के बछड़े के सींग नहीं है। इस उदाहरण को लेकर घोड़े के सींगों की कल्पना कर उनका अन्वेषण करना मूर्खता है। अंगूठी में सोना है। सुनार उसे कुंडल बना देने पर भी सोना है। पर कुंडल में अंगूठी नहीं है। एक पेड़ है तो उसका बीज भी है। वटवृक्ष का बीज अत्यधिक छोटा है। पर उससे उत्पन्न होनेवाला वटवृक्ष बड़ा होने पर बहुत बड़ा दिखाई देता है। भेद-अभेद, नित्य-अनित्य, आदि स्वरूपों को या परिणामों को स्याद्वाद के बिना किसी अन्य पद्धति से मूलभूत तथ्य से दूर हुए बिना, विवेचन करना संभव नहीं है।

आत्मा नित्य है, शरीर अनित्य है। पर राम की आत्मा और लक्ष्मण की आत्मा दोनों अलग-अलग हैं। राम को चोट लगेगी तो राम का शरीर ही चोट का अनुभव करेगा, लक्ष्मण का शरीर उसे महसूस नहीं करेगा। इस प्रकार भेद-अभेद, नित्य-अनित्य आदि को स्याद्वाद ही स्पष्ट कर सकता है। सभी आत्माएँ ज्ञान-स्वरूपी हैं। अतः राम की आत्मा और लक्ष्मण की आत्मा दोनों में कोई भेद नहीं है- ऐसा कहना भी सच ही है। पर यह वर्णन, राम-लक्ष्मण के शारीरिक भेद को या उनकी शारीरिक अनित्यता को नहीं बता सकता है। 'राम का शरीर अलग है, लक्ष्मण का शरीर अलग है।' - ऐसा कहते समय दोनों भाई कैसे हुए? यह भी इस भिन्नता से समझ नहीं सकते हैं। आत्मा के संबंध को ध्यान में लेकर ही दोनों के भाईपने को स्पष्ट किया जा सकता है।

सत्यार्थ को पूर्णरूप से अनुभव किया जा सकता है। अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। त्रिकाल सम्मत द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की दृष्टि से वर्णन किये जाने वाले शब्दों को स्याद्वाद लाञ्छन से यदि अंकित किया जाए तो संभव है कि एक द्रव्य को पूर्ण रूप से निर्दोष जान सकते हैं।

अनेकान्त	=	मानसिक नियति
स्याद्वाद	=	शाब्दिक नियति
सप्तभंगी	=	वे शब्द

वे सात शब्द, दृष्टि या कोण क्या हैं?

1) स्यात् अस्ति

2) स्यात् नास्ति

3) स्यात् अस्ति-नास्ति

4) स्यात् अवक्तव्य

5) स्यात् अस्ति अवक्तव्य

6) स्यात् नास्ति अवक्तव्य

7) स्यात् अस्ति-नास्ति-अवक्तव्य

ये सात दृष्टियाँ ही सप्तभंगी कहलाती हैं। यह सप्तभंगी प्रमाण-सप्तभंगी, नयसप्त भंगी के भेद से दो प्रकार है। प्रमाण सप्तभंगी वस्तु की अखण्डता को स्पष्ट करता है। नय सप्तभंगी वस्तुओं के बीच की भिन्नता को स्पष्ट करता है।

ये दोनों प्रकार की सप्तभंगी, पदार्थज्ञान कराने के लिए कुछ मानदंड को अपनाती हैं।

वे मानदंड क्या हैं? -

1) काल

2) आत्म-स्वरूप (स्वभाव)

3) अर्थ (वस्तु/पदार्थ)

4) सम्बंध

5) उपकार

6) गुणीदेश (क्षेत्र)

7) संसर्ग

8) शब्द

उपरोक्त कथन के आधार पर हमने जो समझा है उसे संक्षेप में निम्न प्रकार कह सकते हैं-

(1) स्याद्वाद पदार्थों को 'है' या 'नहीं' इन दो दृष्टिकोण से देखता है।

(2) इन दो दृष्टिकोण से देखते समय अन्य कोण अपने आप समझ में आ जाते हैं।

(3) हरेक दृष्टि से जो बताया जाता है वह सत्य ही है। एक दूसरे का विरोधी नहीं है। जैसा कि जल द्रव (तरल) पदार्थ है, बर्फ दृढ़ (ठोस) वस्तु है। पर वह जल से संयुक्त है। दोनों में विरोध नहीं है।

सत्यार्थ को पूर्ण एवं सत्य रूप से अनुभव करने के लिए जैनधर्म ने विश्व को सबसे बड़ा दान यदि कुछ दिया है तो वह है अनेकान्त। अनेकान्त से जो मनोभाव उत्पन्न होता है वह संसार के सभी लोगों को परस्पर अहित पहुँचाए बिना जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। सभी पदार्थों को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखकर सत्य को स्वीकार करता है। ''विस्तृत मनोभाव विकसित होने पर, शब्द निर्बल है, सभी शब्दों में कथंचित् सत्यार्थ है, पूर्ण सत्यार्थ को केवल अनुभव किया जा सकता है।'' यह सिद्धान्त मनुष्य को मनुष्य के रूप में जीने की कला देता है।

अनुवादक (हिन्दी में)

आई.जम्बूकुमारन् जैन शास्त्री

ध्यान प्रक्रिया

मुनि श्री आर्जवसागर जी

सद्‌धर्म बन्धुओं,

मुक्ति प्राप्त कराने वाले प्रशस्त ध्यान के प्रसंग पर हम लोग यहाँ पर कुछ चिंतन या चर्चा कर रहे हैं, और द्वादशांग जिनवाणी के अवगाहन में ध्यान की प्रक्रिया को समझने का प्रयास कर रहे हैं। भव्य आत्माओं के जीवन में सच्चे सुख और शान्ति के लिए तथा मुक्ति प्राप्ति के लिए, मोक्ष अवस्था का अनुभव करने के लिए ध्यान की निर्मलता परम् आवश्यक है। ध्यान एक साधन है। मोक्ष उसका साध्य है। जैसे कारण के बिना कार्य नहीं होता, मार्ग के बिना मंजिल नहीं मिलती वैसे ही ध्यान के बिना साध्य रूप उस मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। अपनी आत्मा में स्थित अनादिकालीन एक सौ अड़तालीस 148 कर्म जो मूल में आठ कर्मों के रूप में है। उनको जलाने के लिए ध्यान एक अग्नि हैं। जैसे दूध को तपाया जाता है। फिर उसमें जामन डाला जाता है या जमाया जाता है। तब दही बनता है। फिर उसको मथानी से और दो रस्सियों के योग से मथा जाता है, तब उसमें नवनीत आता है। उस नवनीत को पुन: तपाया जाता है तब घृत बन जाता है। उसकी सुगन्धी चारों ओर फैल जाती है। एक बार घृत बनने के बाद पुन: वह दुग्ध नहीं बनता है। यह बात सर्वविदित है। बस इसी उदाहरण की तरह इस आत्मा को बारह तपों की आग में तपाया जाता है। अन्तिम तप वह ध्यान है इसके बाद कोई तप नहीं होता है। फिर तपके साथ भेद विज्ञान का जामन डाला जाता है। शरीर अलग है और आत्मा अलग है। ऐसे अनुभव में लाया जाता है तब कहीं बाईस परिषहों को जीतने की शक्ति इस आत्मा के अन्दर आती है। शरीर से निस्पृह होना पड़ता है। ''इच्छा निरोधो तप:'' वाली बात हमें ध्यान में रखनी पड़ती है। जब इच्छाओं का निरोध होता है तो सभी प्रकार के संकल्प-विकल्प समाप्त हो जाते हैं। एकाग्रता आती है, एकाग्रता का नाम ही ध्यान है। संसार में अनेक प्रकार के पदार्थ हैं। शरीर भी एक पदार्थ है। अनादि काल से मोह, ममता, राग, द्वेष चल रहा है। उसी बजह से साधक तुरंत ही अपनी आत्मा में लीन नहीं हो पाता। किसी समय भीतर और फिर बाहर आता है साधु बनने के बाद भी वे चौबीस घंटे या हमेशा उत्कृष्ट ध्यान में लीन नहीं हो पाते, या निश्चय में लीन नहीं हो पाते। उन्हें कुछ समीचीन व्यवहारिक रूप क्रियाओं में भी आना पड़ता है। फिर पुन: सामायिक के माध्यम से भेद-विज्ञान के माध्यम से अपनी आत्मा में पहुँच जाते हैं और निश्चय का अनुभव करने लग जाते हैं। फिर कुछ काल के बाद पुन: समीचीन व्यवहार में आकर के समिति और षट् आवश्यक रूप क्रियाओं में लीन हो जाते हैं। निश्चय अप्रवृत्ति रूप में है और व्यवहार प्रवृत्ति रूप में है। ऐसे प्रवृत्ति, अप्रवृत्ति, निश्चय, व्यवहार चलता रहता है। निश्चय में जाते हैं तो अप्रवृत्ति रूप ध्यान अवस्था आ जाती है। व्यवहार में आते हैं तो प्रवृत्ति होने लग जाती है। लेकिन साधुओं का जीवन ऐसा है कि क्रिया में प्रवृत्ति में आने के बाद भी वे धर्म को नहीं छोड़ते, यही उनका समीचीन व्यवहार है। जबकि सामान्य गृहस्थ हमेशा व्यवहार में ही है। निश्चय तो उसको मिलता ही नहीं है। निश्चय को पढ़ सकता है, निश्चय को लक्ष्य बना सकता है, उस पर चर्चा भी कर सकता है प्राप्त करने की भावना भी कर सकता है। लेकिन निश्चय में लीन नहीं हो सकता, कारण कि उसके पास परिग्रह है। कारण कि उसके पास संसार

है। जब तक वह पूर्ण निर्ग्रन्थ नहीं बनता तब तक उसके पास निश्चय रूप लीवलीनता की बात नहीं आती । हाँ इतना कह सकते हैं कि पंचपापरूप असमीचीन व्यवहार से व्रत, देश संयम रूप समीचीन व्यवहार तक आते हैं गृहस्थ लोग। पाँच पाप, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह ये असमीचीन व्यवहार कहे जाते हैं। इसके बिना गृहस्थों का जीवन चलता नहीं, कुछ न कुछ थोड़े रूप में पाप होते ही रहते हैं। उसी पाप से बचने के लिए और पापों के क्षय के लिए तथा निश्चय को पाने की भावना रखते हुए गृहस्थ लोग निर्ग्रन्थ पद की साधना करने हेतु समीचीन व्यवहार की ओर आते हैं। वे देवपूजा, गुरु, उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, दान में लीन होते हैं जो उनके षट् आवश्यक हैं। जैसे कि मुनियों के षट् आवश्यक समता, स्तुति, वंदना, प्रत्याख्यान, प्रतिक्रमण और कायोत्सर्ग कहे गए हैं। श्रावक के ये षट् कर्म या षट् आवश्यक हैं जो साबुन के समान आत्मा को साफ करते रहते हैं। कपड़े को आप साफ करते हैं कि नहीं, नहीं करेंगे तो गंदा हो जायेगा, फट जायेगा, या गल जायेगा ,बस वैसे ही आत्मा को भी साफ नहीं करें तो पापों के भार से दुर्गति की ओर चली जायेगी। इसलिए प्रतिदिन साबुन के समान इस आत्मा को निर्मल बनाने वाले षट् कर्मों को करना चाहिए।

(ग्वालियर में दिये गये प्रवचन से)

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का रामटेक में मंगल चातुर्मास

संत शिरोमणी प.पू. आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज का ससंघ मंगल पावन वर्षायोग श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, रामटेक में जिला नागपुर (महा.) में सानंद हो रहा है।

आचार्य श्री का रामटेक में भव्य मंगल प्रवेश दिनांक 26.6.2008 रविवार को हुआ।

मंगल प्रवेश बहुत ही उत्साहित वातावरण में बाजे गाजे के साथ हुआ।

प्रवेश के समय हजारो धार्मिक बंधु उपस्थित थे। पुरुष वर्ग सफेद व महिलाएँ केशरी परिधान में थीं।

वर्षायोग मंगल कलश स्थापना का कार्यक्रम 20 जुलाई 2008 को हजारों धर्मप्रेमी बंधुओं की उपस्थिति में आनंद-उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ।

आचार्य श्री के प्रवचन प्रति रविवार को दोपहर 2.30 बजे से होते हैं।

देश के विभिन्न स्थानों से श्रद्धालु आचार्य श्री व अतिशयकारी 1008 भ. शांतिनाथ के दर्शनार्थ पहुँच रहे हैं।

ज्ञातव्य हो कि रामटेकजी में आचार्य श्री विद्यासागर जी के आशीर्वाद से पाषाण निर्मित चौबीसी एवं पंचबालयति जिनालय का निर्माण कार्य द्रुत गति से चालू है। यह वास्तु विश्व की एक अनुपम कृति होगी।

रामटेक नागपुर से लगभग 50 कि.मी. की दूरी पर है। नागपुर से बस व रेल सुविधा उपलब्ध है।

संपर्क सूत्र : सतीशजी कोयलेवाले (अध्यक्ष) मो. 94256 85741
वर्षायोग समिति : रमेश मोदी (महामंत्री) मो. 93261 76105
प्रकाशचंद जी बैसाखिया (कोषाध्यक्ष) मो. 98229 27255
समत जैन (मंत्री) मो. 9890127191
रवीन्द्र जैन, इंजीनियर (उपमंत्री) मो. 98503 37787

अभूतपूर्व धर्मप्रभावना की स्वर्णिम यादें

बी.एस. जैन (तमिलनाडु)

तामिलनाडु प्रांत में मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज द्वारा 7 चातुर्मास भिन्न-भिन्न जगहों पर किये गये चातुर्मासों के माध्यम से मुनि श्री द्वारा जो अभूतपूर्व धर्म प्रभावना के कार्य हुए वे वाणी द्वारा अकथनीय हैं, कोई प्रत्यक्षदर्शी ही वह सभी प्रभावना के कार्यो को अनुभव कर सकता है। मुनि श्री द्वारा संपादित प्रभावना के कार्यो को लिखने का प्रयास मात्र कर रहा हूँ।

तामिलनाडु प्रान्त में सभी प्राचीन जैन बस्ती वाले गाँवों में दिगम्बर जैन जिनालय पाये जाते हैं लेकिन अभी कुछ शहरों में दिगम्बर जैन लोग गाँव से जाकर सर्विस आदि के लिए बस गये हैं जिनमें से कुछ लोग उत्तर भारत के भी आकर बसे हैं जो व्यापार आदि के लिए उत्तर भारत से यहाँ आये हैं। उन शहरों में तिरुवन्नामलें, बैतूर, पुत्गामूर, मोटूर, आरणी, निल्लवन, पालयम ऐसी 6 जगहों पर जिन मंदिर न होने से लोग नित्य देवदर्शन से वंचित थे इन लोगों के लिए मुनिश्री की प्रेरणा से जिन मंदिरों का निर्माण होकर पंचकल्याणक भी हो जाना किसी चमत्कार से कम नहीं इतने कम समय में कार्य की पूर्णता दृढ़ संकल्पी आगम निष्ठ साधु की प्रबल प्रेरणा द्वारा ही संभव है। आज श्रावकगण इन मंदिरों में अपने षट् आवश्यक पालन करते हैं दिगम्बर मुनि भी इन जगहों पर मंदिर की सुविधा से रुकने लग गये हैं।

''मुनि श्री के तामिल प्रांत में पधारने से कई श्रावकों ने उस समय प्रतिमा आदि लेकर व्रतों को धारण किया। और कई निकट भव्यों ने जिन दीक्षा लेकर मोक्षमार्ग प्रशस्त किया।''

''मुनि श्री ने रुढ़ि रहित सच्चे जिनागम का प्रचार किया जो रास्ता मुनिश्री ने दिखाया उस पर लोग अभी भी चल रहे हैं।''

पोन्नूरमलै पर (मलै तमिल भाषा में पहाड़ी को कहते हैं) जहाँ आचार्य कुंद-कुंद के प्राचीन जीर्ण शीर्ष चरण ही विराजमान थे वहाँ मुनि श्री की प्रेरणा से पहाड़ी पर प्राचीन महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापित हुई। यह प्रतिमा पोन्नूरमलै से कुछ दूर एक अजैन के खेत में एक दिन पूर्व ही मिली थी संयोग से दूसरे दिन ही मुनिश्री का उधर से बिहार होता है मुनि श्री प्रतिमा देखकर रुक जाते हैं और उस अजैन किसान से मुनिश्री प्रतिमा माँग लेते है और वह किसान मुनि श्री के प्रभाव से प्रतिमा दे भी देता है जो प्रतिमा लाखों रू. में भी नहीं मिल सकती थी वह मुनि श्री के प्रभाव मात्र से मिल गयी और मुनि श्री की प्रेरणा से पोन्नूरमलै (पहाड़ी) पर स्थापित की गयी। ज्ञात हो-कि पोन्नूरमलै आचार्य कुन्द-कुन्द की तपस्थली है यहीं से तपस्या करके आचार्य कुंद-कुंद देव सीमंधर स्वामी के समवशरण में दर्शन व शंका निवारणार्थ गये थे।

''गुरुदेव तमिल भाषा सीखकर प्रवचन तमिल भाषा में ही देने लग गये थे व भगवान की स्तुति आदि भी तमिल भाषा में लिखी गयी यह मुनि श्री के अपूर्व ज्ञान क्षयोपशम का ही प्रभाव कहा जा सकता है।''

गुरुवर ने अजैनों में भी अहिंसा धर्म का प्रचार किया तथा बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण हो इसलिए गाँवों में गुरुकुल चलाने की प्रेरणा दी।

मुनि श्री के आशीर्वाद से पोन्नूरमलै क्षेत्र पर एक गुरुकुल ''महावीर जैन पाठशाला, नाम से विशाखाचार्य आश्रम के अन्तर्गत शुरू हुआ था जो उत्तरोत्तर प्रगति पर है आज ६२ अजैन बच्चे पाठशाला में रहकर लौकिक व धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ये बच्चे रात्रि भोजन नहीं करते और पानी छानकर पीते हैं। बच्चों के अभिभावक लोग भी ये जैन संस्कार बच्चों की बजह से यह संस्कार पालने लग गये हैं यह आज के समय में बड़ी बात है कि इस पंचमकाल में मुनि श्री के मार्गदर्शन से अजैन भी आज जैन धर्म को व उसके आचार-विचारों का पालन कर रहे हैं''

''विशाखाचार्य आश्रम की नींव भी मुनि श्री की प्रेरणा से पड़ी थी आज आश्रम में कई व्रती व श्रावकगण वर्तमान में धर्म साधना कर रहे हैं आश्रम के अन्तर्गत ही एक जिन मंदिर महाराज की प्रेरणा से बनाया गया था इस प्रकार से महाराज के 7 चातुर्मासों में कुल 7 जिनमंदिर का निर्माण पूर्ण होकर पंच कल्याणक भी मुनि श्री के रहते हो गये थे।''

''आश्रम आज निरन्तर प्रगति कर रहा है। मुनि श्री की प्रेरणा से गोवंश रक्षार्थ एक गोशाला चालू हुई थी उसमें भी इस समय गाय-बछड़ों की कुल संख्या 25 हो गयी है जिनमें 6 गाय वर्तमान में दूध भी दे रही हैं।''

मुनि श्री के आशीर्वाद से ''श्रुतकेवली मासिक पत्रिका भी प्रतिमाह तमिल भाषा में प्रकाशित हो रही है।'' अधिक क्या कहूँ मुनि श्री के अनेंको उपकार तमिलनाडु प्रान्त पर हैं।
वन्दना नमोस्तु उनके श्री चरणों में दो लाइनें :-

''मुनि श्री महिमा वरणी न जाय, मुनि नाम जपूँ मन वचन काय ।।''

अरे जिया ! जग धोखे की टाटी ।। टेक ।।

झूठा उद्यम लोग करत हैं जिसमें निशदिन घाटी ।
जान बूझकर अन्ध बने हैं आँखन बाँधी पाटी ।।

निकल जाँयगे प्राण छिनक में पड़ी रहेगी माटी।
दौलतराम समझ मन अपने, दिल की खोल कपाटी।।

- दौलतराम जी

सम्यक् ध्यान शतक

मुनि श्री आर्जवसागर

मंगलाचरण

सिद्ध देव जिन श्रेष्ठ हैं, परमेष्ठी पद रूप ।
नमता सम्यक् ध्यान में, बनूँ आप्त अनुरूप ।।

पर पदार्थ संयोग से, कर्म बंध संसार।
भोज तजें चिंता मिटे, ध्यान करे भव पार ।।

कर्म बंध गति अगति, होते जिसमें काम ।
चारों गतियों में भ्रमण, जिसका भव है नाम ।।

सर्वकर्म का नाश जब, जहाँ होय वह मोक्ष।
निर्ग्रन्थों को प्राप्त हो, सिद्ध बनाता मोक्ष ।।

रत्नत्रय-मय मोक्षमग, पाता है वह भव्य ।
मोक्षमार्ग न मोक्ष को, पाता कभी अभव्य ।।

वस्तु स्वभाव दश धर्म व रत्नत्रय है धर्म।
दया धर्म आधार है, जिसके बिना अधर्म ।।

वस्तु स्वभाव सु-लक्ष्य हो, सच्चा सौख्य स्वरूप।
दया आदि सोपान हैं, शिव मंजिल अनुरूप ।।

आतम हित शिव सौख्य है, आकुलता से दूर।
रत्नत्रय से प्राप्त हो, आत्म गुणों से दूर ।।

क्रमशः.......

तीर्थ

श्रीपाल जैन 'दिवा'

तीर्थंकर वाणीखिरी, या गणधर का वास ।
मोक्ष गये साधक मुनी, थान तीर्थ वे खास ।।

अतिशय देवी-देव के, मूर्ति मिले सपनाय ।
अतिशय क्षेत्र संज्ञाधरे, वे भी तीर्थ कहाय ।।

महासाधु साधक बड़े, पल-पल शुद्धि वृद्धाय ।
गमन सिद्धालय थान वे, सिद्धक्षेत्र कहलाय ।।

मुनि-मंदिर-आगम चरण, पंच परमेष्ठी रूप ।
कर्म निर्जरा निमित्त जो, सभी तीर्थ के रूप।।

भेद तीर्थ के दो बड़े, द्रव्य तीर्थ औ, भाव ।
तीर्थ यात्रा जो करे, संवर का सद्भाव ।।

संताप शान्त तृष्णा नसे, मल शुद्धित्रय काज ।
इसीलिए द्रव्य तीर्थ हैं, मोक्ष मार्ग का राज ।।

जिनदेव सभी संयुक्त है, दर्शन ज्ञान चरित्र ।
त्रय कारण संयुक्त वे, भाव तीर्थ पवित्र ।।

दर्शन कर जिनदेव के, दर्शन सारे तीर्थ ।
पर प्रमाद से उपेक्षा, विमुख न होओ तीर्थ ।।

जहाँ-जहाँ जिन देव मुनि, वहाँ वहाँ हैं तीर्थ ।
भावाधारित धर्म जिन, आतम दर्शन तीर्थ ।।

सरल ह्रदय दर्शन करे, कठिन विषय विष पान ।
समतालू अमृत पिये, कठिन कुगाँठ गठान ।।

सरल सरलता से सने, कठिन्न धर्म निकटाय ।
बिल में जाते समय तो, साँप सरल हो जाय ।।

जो तारे वह तीर्थ हैं, भव सागर के पार ।
जिन चरित्र तारक महा, सब तीर्थों का सार ।।

तीर्थंकर ही तीर्थ है, तारक पारक नाथ ।
श्रद्धा दर्शन साधना, बनो स्वयं के नाथ ।।

कल्याणक तीर्थकरों के, या मुनि तपसी वास ।
पावन थानक तीर्थ वे, काटे बन्धन पाश ।।

जहाँ-जहाँ मुनि पद पड़े, खण्ड खण्ड भू तीर्थ ।
निर्वाणे जिस थान से, तीर्थों का वह तीर्थ ।।

निर्वाणे जिस थान से, तीर्थंकर महातीर्थ ।
निर्वाण क्षेत्र सिरमोर वे, तीर्थों के वे तीर्थ ।।

बीनागंज (म.प्र.) की दुखद घटना

बीनागंज 6 सितम्बर - शनिवार को मंदिर जी जाते समय मंदिर के द्वार के निकट साम्प्रदायिक शक्तियों से प्राप्त आशीर्वाद युक्त सिरफिरों ने आर्यिकाश्री ऋजुमति माताजी पर अंडे फेके जो माताजी के ऊपर आकर गिरें। इस निम्न श्रेणी की हरकत का 'भावविज्ञान' परिवार एवं सम्पूर्ण भोपाल एवं म.प्र. जैन समाज आक्रोश के साथ विरोध करता है। इस घटना की घोर निन्दा करता है पुलिस विभाग शातिर अपराधियों को तुरंत गिरफ्तार कर उचित कार्यवाही करें। अन्यथा इस घटना के विरोध में सम्पूर्ण म.प्र. व अन्य प्रदेशों में भी आन्दोलन होंगे। जिसका उत्तरदायित्व शासन का होगा।

श्रीपाल जैन 'दिवा'
सम्पादक

आत्म सम्बोधन

आया बुढ़ापा, मूरख चेत। उड़ गई चिड़ियाँ, चुग गई खेत ।।

पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश'

गर्दन मड़वा जैसी हिलती, पलित केश सब हो गये सेत ।
दृष्टि-विवेक रहा न कुछ भी, हित-अनहित न दिखाई देत ।।

लार-नाक परनाले बहते, रस वीभत्स चुनौती देत ।
गलित दंत-नख, वलित हुआ तन, रेख गणित की शिक्षा हेत।।

हाथ की लाठी थर-थर काँपे, कमर धनुष की आकृति लेत ।
सूखी लकड़ी से पग दोनों, देह खण्डर बैठा प्रेत।।

सरिता का जल सूख गया है, शेष बची है रेतई-रेत ।
अंधकूप में पैर लटकते, आरई मौत धकेला देत ।।

बचपन बीता खेल-खेल में, यौवन विषयों रहे अचेत ।
तन जर्जर अब हुआ जरा से, जरा-जरा में रो-रो देत ।।

क्यों ''राकेश'' हो रहे गाफिल, अब भी क्यों हो रहे अचेत।
प्रभु का नाम सुमर लो मन से, वे ही अंत सहारा देत ।।

❖ ❖ ❖ ❖

मुक्ति के योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव

शिवचरनलाल जैन मैनपुरी

श्रावक श्रमण भी श्रम करते हें संयम सहित तप प्रशस्त श्रम है। ऐसे ही प्रशस्त श्रमिक है भाई शिवचरणलाल जी उद्योग के पति है पर शिवचरणों के लाल हैं। संस्कृत के जितने कुशलकवि हैं उतने ही जैनदर्शन के सुयोग्य विद्वान हे। प्रस्तुत लेख में उनके वैदुष्य के दर्शन करेंगे आप। - सम्पादक

जे जाया झाणग्गिए कम्म कलंक डहेवि।
णिच्चु णिरंजणु णाणुमय ले परमप्प णवेवि॥

परमात्मप्रकाश 1॥

प्रस्तावना- षड्द्रव्यमय विश्व में जीव दो रूपों में पाया जाता है। संसारी और मुक्त। जो पुद्गलमय कर्म बन्धन से सहित होकर जन्म-मरण के चक्र में नाना योनियों में भ्रमण कर चतुर्गति दुःख भोग रहे हैं वे संसारी हैं। जो कर्मबन्धन से मुक्त होकर अष्ट गुण सहित और अन्तिम शरीर से किंचित् न्यून आकार में लोक शिखर पर विराजमान हैं, पुनः जन्म धारण कर संसार में प्रत्यावर्तन नहीं करते वे मुक्त जीव या सिद्ध परमात्मा हैं। बन्ध के कारणों का अभाव होने तथा सम्पूर्ण कर्मों की निर्जरा द्वारा मोक्ष की सिद्धि होती है।

इस प्रक्रिया को या मोक्षोपयोगी प्रयत्न को सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की एकता रूप परिणति कहते हैं। आत्मा के जिन परिणामों से सम्पूर्ण कर्मों से पृथक्त्व रूप होता है वह भाव मोक्ष है। यह उपर्युक्त प्रकार से कथित मोक्ष रूप अथवा द्रव्यमोक्ष का कारण होता है।

यह भी ज्ञातव्य है कि यह मोक्ष भी तीन भेदों में विभाजित किया जा सकता है[1]। जीव मोक्ष, पुद्गल मोक्ष, उभयमोक्ष । बन्ध अवस्था से मुक्त होकर जीव का अपने शुद्ध स्वरूप में अवस्थित होना जीवमोक्ष है। पुद्गल कार्माण वर्गणाएँ कर्म अवस्था से रहित हो मात्र मूल रूप में हो जाती हैं, यह पुद्गल मोक्ष या अजीव मोक्ष है। जीव अजीव समन्वित दोनों रूपों को एक साथ देखें तो उभयमोक्ष है। यहाँ तात्पर्य जीवमोक्ष से है।

प्रत्येक कार्य अपने योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव रूप स्वचतुष्टय के द्वारा निष्पादित होता है। बिना योग्य सामग्री या कारणों की समष्टि के, योग्यता रखता हुआ भी कोई पदार्थ कार्य करने में असमर्थ है। जैसे वृक्ष बनने हेतु बीज को निम्न चतुष्टय की आवश्यकता है।

1. बीज का स्वस्थ रूप द्रव्य
2. उसके योग्य उर्वरा मिट्टी युक्त क्षेत्र, आर्द्रता।
3. योग्य काल, मौसम जैसे आम के लिए जून-जुलाई का समय।
4. बीज के वृक्षत्व रूप परिणमन की शक्ति आदि।

उसी प्रकार आत्मा को मुक्ति प्राप्त करने हेतु द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव रूप उपयुक्त चतुष्टय की आवश्यकता है। इनमें कुछ कारण या सामग्री अन्तरंग रूप होती है, कुछ बाह्य रूप में । इस विषय में आचार्य समन्तभद्र स्वामी का निम्न उल्लेख आगम प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना अप्रासंगिक न होगा-

बाह्येतरोपाधिसमग्रतेयं, कार्येषु ते द्रव्यगत स्वभावः।

नैवान्यथा मोक्षविधिश्च पुंसां, तेनाभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधानाम्॥ स्वयंभू-60॥

- हे भगवन् बाह्य अर्थात् अपेक्षित निमित्त कारण और अन्तरंग उपादान कारण दोनों की समग्रता कार्यों को सम्पन्न करती है यह द्रव्यगत स्वभाव है। अन्य प्रकार नहीं। इसके बिना तो मोक्ष की विधि ही मनुष्यों को नहीं है। आपने यह प्रकट किया है अतः आप ज्ञानी जनों द्वारा अभिवन्द्य हैं।

उपर्युक्त मुक्ति योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव रूप चतुष्टय को दो रूपों में विश्लेषित करना उपयोगी होगा।

1. साक्षात् चतुष्टय 2. परम्परा चतुष्टय।

साक्षात् चतुष्टय मुक्ति अवस्था से अनन्तर एक समय पूर्ववर्ती कारण समयसार रूप है। परम्परा चतुष्टय सम्यक्त्व सन्मुख जीव की प्रारम्भिक अवस्था से लेकर साक्षात् चतुष्टय से अनन्तर पूर्ववर्ती कहा जा सकता है।

साक्षात् द्रव्यरूप- साढ़े तीन हाथ अवगाहना से लेकर 525 धनुष तक अवगाहना युक्त शरीराकार में परिणत, आकाश प्रदेशों व आत्मप्रदेशों में विस्तृत जीवद्रव्य। चार घातिया ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्म के बन्धन से रहित, परमौदारिक स्फटिकवत् निर्लेप शरीर के साथ आत्मतत्त्व का अवस्थान। यह चौदहवें अयोगकेवली गुणस्थान का अन्तिम समय का रूप है। उसमें जीवन्मुक्त परमात्मा के साथ 13 प्रकृतियों की सत्ता होती है। जैसे दूध के फट जाने पर उसमें जलीय अंश यद्यपि है तथापि वह अलग छँटा हुआ होता है, वैसे ही कर्म प्रकृतियों की मिलावट है तथापि अयोगि दशा होने के कारण आत्मा उनसे छँट जाता है अनन्तर हटकर, पृथक् हो मुक्त हो जाता है। इस गुणस्थान में अघातिया कर्मों का अति मन्द उदय है। वह जीव को अनुपम, अचल, ध्रुव होने में बाधक है।

परमात्म दशा होने में अभी कार्य शेष है। मुक्ति योग्य, द्रव्य पुरुष वेदी होना आगम में आवश्यक कहा गया है। भाव वेद की अपेक्षा आत्म द्रव्य की तीनों वेदों में मुक्ति स्वीकार की गई है। वज्रवृषभनाराच संहनन के अस्तित्त्व में शरीर स्वीकृत है। पुरुषाकार, छायावत्, आकाशवत् आत्मप्रदेशों की स्थिति में मुक्ति की योग्यता है।

ज्ञातव्य है संसार में कर्मबन्धन की अपेक्षा जीव मूर्तिक है। जीव में अमूर्त स्वभाव के साथ मूर्तस्वभाव भी स्वीकार किया गया है। अतः चौदहवें गुणस्थान की अयोगि अवस्था में अन्त समय में वह मूर्तिक है। मूर्तिक जीवद्रव्य में अमूर्तिक स्वरूप सिद्ध पर्याय प्रकट करने की योग्यता है। अमूर्तिक को अमूर्तिक मुक्ति पर्याय की उत्पत्ति का असद्भाव है एवं 18 दोषों से रहित निर्दोष आत्मद्रव्य मुक्ति का अधिकारी है।

मुक्ति के योग्य परम्परा द्रव्य

मुक्ति औदारिक शरीर सहित जीव को प्राप्त होती है। अन्य शरीर से नहीं। इसी में उत्कृष्ट रत्नत्रय की योग्यता है। उत्कृष्ट धर्म-ध्यान एवं चारों शुक्लध्यान औदारिक या परमौदारिक शरीर में स्थित आत्मा को होता है। ऊपर अवगाहना का उल्लेख किया ही है। विशेष यह है कि केवली समुद्घात की अवस्था में जीव प्रदेश फैलकर दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरण रूप होते हुए लोकाकाश के बराबर हो जाते हैं, तीन लोक में व्याप्त होते हैं। इस दृष्टि से लोकाकाश प्रमाण अवगाहना से भी मुक्ति परम्परा से प्राप्त होती है। किन्तु जब जीव मुक्त

होता है तब संकोच से प्रदेश लोक व्यापी नहीं होते। व्यञ्जन पर्याय मुक्तजीव की चरम शरीर से कुछ न्यून होती है। ऊर्ध्वगमन स्वभाव से सिद्धशिला पर जाकर वज्रशिला निर्मित अभग्न प्रतिमा के समान अभेद्य रूप में टंकोत्कीर्ण स्वभाव से आत्मा स्थित हो जाती है।

प्रत्युत्पन्न नय से मनुष्य गति से तथा भूत प्रज्ञापन नय से चारों गति से मुक्ति प्राप्ति संभव है। निर्ग्रन्थ लिंग से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। कहा भी है-

णवि सिज्झइ वत्थधरो जिणसासणे जइ वि होइ तित्थयरो।

णग्गो वि मोक्खमग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे॥

जिनशासन में वस्त्रधारी यदि तीर्थंकर भी हो तो मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। नग्नता ही मोक्षमार्ग है, शेष सभी उन्मार्ग हैं।

तीर्थंकर पदवी से अथवा सामान्य जीवद्रव्य में मोक्ष की योग्यता है जीव तीन प्रकार के हैं-भव्य, अभव्य एवं दूरान्दूर भव्य। इनमें से भव्य जीव ही मुक्ति के योग्य है। करणलब्धि परिणत प्रथम गुणस्थान से लेकर अपेक्षित रूप से चौदहवें गुणस्थान तक सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप परिणत जीव में मोक्ष की योग्यता है। यह योग्यता बहिरंग और अंतरंग कारणों की (निमित्त उपादान) की समष्टि से प्रकट होती है।

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति हेतु भव्यता, साकारोपयोग (ज्ञानोपयोग) संज्ञी पर्याप्तक, जाग्रत अवस्था युक्त आदि जिन विशेषताओं की आवश्यकता है उनसे युक्त जीव द्रव्य मुक्ति की योग्यता रखता है। परम्परा रूप से देखें तो मोक्षमार्ग के योग्य अथवा मोक्ष के योग्य होना एक ही रूप में सार्थक है।

मुक्ति योग्य साक्षात् क्षेत्र

सर्वार्थसिद्धि में उल्लेख है-क्षेत्रेण तावत् कस्मिन् क्षेत्रे सिद्ध्यन्ति ? प्रत्युत्पन्नग्राहिनयापेक्षया सिद्धक्षेत्रे स्वप्रदेशे आकाश प्रदेशे वा सिद्धिर्भवति। 10/9

अर्थात् साक्षात् दृष्टि से आत्मप्रदेश रूप सिद्धक्षेत्र या अपेक्षित आकाश प्रदेश से सिद्धि होती है। निश्चयनय से स्वावगाहना क्षेत्र से व व्यवहार नय से पर क्षेत्र या स्थान से।

परम्परा दृष्टि से क्षेत्र

कर्मभूमि से ही मुक्ति प्राप्त होती है। मनुष्य लोक के अन्तर्गत 5 विदेह, 5 भरत एवं 5 ऐरावत क्षेत्रों में ही यह योग्यता है। अथवा विस्तार से 160 विदेह तथा भरत, ऐरावत मिलाकर 170 कर्मभूमियाँ हैं। संहरण की अपेक्षा ढाईद्वीप प्रमाण मनुष्य क्षेत्र से मुक्ति प्राप्त होती है। दृष्टव्य है-

भूतग्राहिनयापेक्षया जन्म प्रति पञ्चदशसु कर्मभूमिसु संहरण प्रति मनुष्यक्षेत्रे सिद्धिः। स. सि. 10/9

अर्थात् अपहरण की स्थिति में समस्त मनुष्य क्षेत्रवर्ती (भोगभूमि या कर्मभूमि) समुद्र या आकाश के विवक्षित क्षेत्र से मुक्ति संभव है।

अब काल की अपेक्षा विचार करते हैं।

साक्षात् काल

मुक्ति योग्य साक्षात् काल अथवा प्रत्युत्पन्न नयापेक्षा चौदहवें अयोगकेवली गुणस्थान का चरम समय है। न्याय शास्त्रों के मत में पूर्व पर्याय जो कि एक समयवर्ती है नवीन पर्याय को जन्म देती है। यह उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि मुक्ति रूप पर्याय का उपादान कारण संसार की अन्तिम समयवर्ती पर्याय (उपर्युक्त अयोग केवली की चरम समय रूप) हैं। निश्चयनय से वही काल मुक्ति योग्य है। दृष्टव्य है-

कालेन कस्मिन काले सिद्धिः ? प्रत्युत्पन्न नयापेक्षया एक समये सिद्धो भवति। सवार्थसिद्धि 10/9

परम्परा काल

यहाँ मुक्ति के योग्य पारम्परिक काल का विचार करते हैं। भूतप्रज्ञापन नय की अपेक्षा से जन्म की दृष्टि से सामान्य रूप से भरत, ऐरावत क्षेत्र में उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी काल मुक्ति योग्य है। विशेष रूप से अवसर्पिणी के सुषमा दुषमा के अन्त्य भाग में और दुषमा सुषमा में उत्पन्न हुआ सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त काल में नहीं। संहरण की अपेक्षा सब काल में तथा उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में मुक्ति प्राप्त होती है(2)।

आचार्य यतिवृषभ ने इसका विवरण देते हुए निग्न गाथाएँ लिखी हैं-

सुसमदुसमम्मि णामे सेसे चतुरसीदिलक्खपुव्वाणि।
वास तए अडमासे इगि पक्खे उसह उप्पती॥
तिय वासा अडमासं पक्खं तह तदिय काल अवसेसे।
सिद्धो रिसह जिणिंदो वीरो तुरिमस्स तेत्तिए ऐसे॥ (तिलोयपण्णती 4/ 553, 1239)

सुषमादुषमा नामक तीसरे काल में चौरासी लाख पूर्व और तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहने पर भगवान् ऋषभदेव का जन्म हुआ और उन्होंने चौरासी लाख पूर्व की आयु प्राप्त कर तीसरे काल में ही तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहने पर मुक्ति प्राप्त की। काल की यह योग्यता हुण्डावसर्पिणी की विशेषता के कारण हुई। भगवान् महावीर ने चतुर्थ काल की सामान्य योग्यतानुसार तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहने पर मुक्ति प्राप्त की।

विदेह क्षेत्र की दृष्टि से वहाँ सदैव मुक्ति योग्य काल है। भरत, ऐरावत के मध्यम चतुर्थकाल के समान वहाँ काल की योग्यता है।

मुक्ति प्राप्त करने में योग्यता के विकास में काल द्रव्य की सहायता भी आवश्यक है। मोक्ष रूप परिणमन भी तो जीव का ही है। उसमें ''वर्तना परिणाम क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य'' इस सूत्र के अनुसार काल निमित्त है। उपादान में योग्यता होने पर भी बिना निमित्त या बाह्य कारण से मुक्ति ही क्या, किसी भी द्रव्य की परिणमन क्रिया संभव नहीं है। ऊपर हम इस सम्बन्ध में भी प्रयोजनीय बृहत्स्वयंभू स्तोत्र का श्लोक नं. 60 उद्धृत कर चुके हैं।

आचार्य वीरसेन भरत क्षेत्र विषयक मुक्ति योग्य काल की प्ररूपणा करते हुए कहते हैं कि दुषमादुषमा, दुषमासुखमा, सुषमासुषमा, सुषमा और सुषमा दुषमा काल में उत्पन्न मनुष्यों के दर्शनमोह का क्षपण नहीं होता। कारण एकेन्द्रिय पर्याय से आकर इस अवसर्पिणी के तीसरे काल में उत्पन्न हुए सर्द्धन कुमार आदि के दर्शनमोह की क्षपणा देखी जाती है(3)। ज्ञातव्य है कि दर्शन मोह का क्षपण भी मुक्ति के मार्ग में एक मुख्य घटक है।

मुक्ति की प्राप्ति रात्रि या दिन के किसी भी अवसर पर हो सकती है। यहाँ केवली समुद्घात द्वारा जो जीव मुक्ति प्राप्त करते हैं, इस विषय में गवेषणा करते हैं। निम्न उल्लेख दृष्टव्य है-

1. छम्मासा उवसेसे उप्पण्णं जस्स केवलं णाणं। ससमुग्धाओ सिज्झइ सेसा भज्जा समुग्धाए॥

2. जेसिं आउसमाइं णामा गोदाणि वेयणीयं च। ते अकय समुग्घाया उच्चंतियरे समुग्घाए॥ षट्.खण्डागम 1-1/60

-आयु में छः माह शेष रहने पर जिन्हें केवलज्ञान उत्पन्न होता है, वे केवली समुद्घात से सिद्ध होते हैं। समुद्घात के विषय में शेष भजनीय हैं।

ज्ञातव्य है कि मूल शरीर को न छोड़कर आत्मा के प्रदेश शरीर से बाहर निकलते हैं, इस अवस्था को समुद्घात कहते हैं। समुद्घात सात प्रकार के हैं -

1. कषाय 2. वेदना 3. विक्रिया 4. आहारक 5. तैजस (शुभ-अशुभ) 6. मारणान्तिक 7. केवली समुद्घात।

समुद्घात के द्वारा परकाया प्रवेश भी संभावित है।

यहाँ यह भी दृष्टव्य है कि मोक्ष प्राप्ति का कोई काल नियम नहीं है। जब जीव तपश्चरण आदि के द्वारा अकाल में ही कर्मों की अविपाक निर्जरा करता है तब मोक्ष मिलता है। काल के अधीन एवं निश्चित या क्रमबद्धता के आधार पर मोक्ष होगा यह मान्यता आगम के विरुद्ध है। यह विचार पुरुषार्थ हीनता का द्योतक है। बिना किसी उपाय के स्वकाल में अपने आप होनहार से मोक्ष मिल जावेगा तथा चारित्रमोह का जब उपशम-क्षय आदि होंगे तो चारित्र भी स्वतः हो जावेगा यह चिन्तन अध्यात्म ज्ञान का दुरुपयोग है। मुक्ति हेतु चतुष्टय में भाव सर्वप्रधान है उसकी दृष्टि से ऊहापोह किया जाता है।

मुक्ति योग्य साक्षात् भाव

प्रत्युत्पन्नग्राही नय से मुक्ति से एक समय पूर्व जो कारण समयसार रूप क्षायिक भाव है, वह मोक्ष का हेतु है। इसमें चौदहवें गुणस्थान का अन्तिम समय अभीष्ट है। इस चरम समय में व्युपरतक्रियानिवृर्त्ति शुक्लध्यान है। उससे इस गुणस्थान की अवधि में जो कुछ चारित्र में अघातिया कर्मों के उदय से किंचित् न्यूनता है वह समाप्त होकर परम यथाख्यात चारित्र प्रकट होता है वह मुक्ति योग्य साक्षात् कारण रूप भाव है। इस भाव को अनेक संज्ञाओं से अभिहित किया जा सकता है। जैसे निश्चयमोक्षमार्ग, शुद्धात्मदर्शन, समस्त कर्म क्षयकारण, परमाद्वैत, परम स्वास्थ्य, परम समरसीभाव, परमभेदज्ञान आदि।

मुक्ति के योग्य परम्परा भाव

जीव के असाधारण पाँच भाव हैं। 1. औपशामिक 2. क्षायिक 3. मिश्र 4. औदयिक 5. पारिणामिक। इनमें क्षायिक, मिश्र व औपशमिक भाव मोक्ष के कारण हैं। औदयिक भावबन्ध के कारण हैं तथा पारिणामिक भाव निष्क्रिय हैं। ज्ञातव्य है कि मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र संसार के हेतु हैं तथा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप रत्नत्रय मोक्ष का कारण है। औपशमिक भाव दर्शन एवं चारित्र हैं। क्षायिक भाव ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य रूप नौ प्रकार हैं। इसे अनन्त चतुष्टय और पाँच क्षायिक लब्धि के रूप में कहा

जाता है। क्षायोपशमिक भाव, चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन, पाँच लब्धि, सम्यक्त्व, चारित्र एवं संयमासंयम के भेद से 18 प्रकार का है। इससे प्रकट होता है कि उपर्युक्त तीन भावों से अपेक्षित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है। कहा भी है-

ओदइया बन्धयरा उवसम खय मिस्सया य मोक्खयरा।

भावो दु पारिणामिओ णिक्किरिया करणोभय वज्जियो होंति ॥ धवल पु. 7 पृ. 9

यहाँ औदयिक भावों को बन्ध का कारण बताया है, किन्तु इसमें यह विवक्षा भी है कि शुभ राग, प्रशस्त राग को मोक्ष के योग्य भाव भी स्वीकार किया गया है। इसमें मंगलपना भी है। प्रायः सभी ग्रन्थों में यह प्रकट होता है। जिनेन्द्र भक्ति, शील, तप, व्रत, वैय्यावृत्य, दान आदि में जो पुण्य भाव है, वे ही विशुद्ध भाव है, वह रागादि की हीनता करने में कारण है, वह मोक्षमार्ग में सहायक है। परम्परा से मोक्ष का कारण है, व्यवहार मोक्षमार्ग है। यह अपेक्षा दृष्टि है। यद्यपि इससे बन्ध भी होता है तथापि इससे संवर और निर्जरा भी होती है। आचार्य वीरसेन स्वामी ने स्पष्ट लिखा है-

केन मंगलं औदयिकादि भावैः मंगलं। धवला 1/1

भगवान् जिनेन्द्रदेव के दर्शन से निकाचित बन्ध का नाश तक बताया है। तत्त्वार्थसूत्र में भी संवराधिकार में ''स गुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः'' सूत्र से यह स्पष्ट है।

बन्ध के चार प्रत्यय हैं- मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग (अपेक्षा भेद से प्रमाद भी)। इनके विपरीत सम्यक्त्व, संयम, अकषाय भाव और अयोग भाव हैं। ये मोक्ष के हेतु हैं। गुणश्रेणी निर्जरा के क्रम से गुणस्थानों की दृष्टि से सम्यक्त्वोत्पत्ति, देशसंयम, संयम, अनन्तानुबन्धी विसंयोजन, दर्शनमोह क्षपण, चारित्रमोहोपशम, उपशान्त कषाय, चारित्रमोह का क्षपण, क्षीणकषाय व सयोगकेवली के परिणाम मोक्ष के प्रत्यय हैं।

ज्ञान की एकाग्रता को ध्यान कहते हैं। ध्यान मोक्ष हेतुओं में प्रधान है। यह धर्मध्यान और शुक्लध्यान के रूप में मुक्ति की योग्यता प्रकट करता है। प्रवचनसार में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने चारित्र को वास्तव में धर्म कहा है वह समभाव रूप है। मोह-क्षोभ से रहित जब आत्मा का शुद्ध परिणाम होता है वह वीतराग भाव मुक्ति के कारण रूप में परिगणित है। यह यथाख्यात चारित्र रूप निश्चय मोक्षमार्ग है। इसे निर्विकल्प शुद्ध आत्मानुभूति, शुद्धोपयोग आदि संज्ञायें प्राप्त हैं। यह श्रमण को ही संभव है। चारित्र अथवा संयम के पाँच भेद हैं- सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय तथा यथाख्यात। भूतपूर्वनय की अपेक्षा, परम्परा की दृष्टि से चार संयम व साक्षात् दृष्टि से यथाख्यात में भी परमयथाख्यात चारित्र रूप भावों से मुक्ति प्राप्त होती है। ज्ञान की दृष्टि से देखें तो क्षायिक ज्ञान एवं श्रुतज्ञान से मुक्ति साध्य है।

व्यवहार-निश्चय मोक्षमार्ग

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र की एकता मोक्षमार्ग है। यह दो प्रकार है- 1. व्यवहार 2. निश्चय। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु, धर्म का यथार्थ श्रद्धान एवं जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष,

पुण्य, पाप इन नव पदार्थों का यथार्थ प्रतीति व्यवहार सम्यक्त्व है। पुण्य, पाप को आस्रव बन्ध में समाहित करने से सात तत्त्वों की अपेक्षा है, पर के आश्रय को लेकर या भेद और उपचार के द्वारा जो निरुपण करता है वह व्यवहार नय है, अतः व्यवहार सम्यग्दर्शन भी पर द्रव्य रूप पुद्गल के सम्बन्ध से सार्थक होता है। इसके अनुसार आराध्य-आराधक, वन्द्य-वंदक, श्रद्धेय-श्रद्धाकर्ता भिन्न-भिन्न होते हैं। भिन्न कर्ता कर्म, कार्य-कारण आदि सभी इसके विषय हैं। व्यवहार सम्यग्दृष्टि जीव सराग सम्यग्दृष्टि है। उसके लक्षण, प्रशम, संवेग, आस्तिक्य और अनुकम्पा हैं। इन्हीं भावों के बल से वह मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होता है। निश्चय सम्यग्दर्शन का भाव आत्माश्रित ही है। कहा भी है-

अप्पा अप्पम्मि रओ सम्माइट्ठी हवेइ फुडु जीवो।
जाणइ तं सण्णाणं चरदिह चारित मग्गो त्ति॥
दर्शनमात्मविनिश्चिति रात्मपरिज्ञानमिष्यते बोधः।
स्थितिरात्मनि चारित्रं कुत एतेभ्यो भवति बन्धः॥ पुरुषार्थसिद्धिउपाय 216

उपर्युक्त के अनुसार पर द्रव्यों से भिन्न अपने आत्मस्वरूप में रुचि सम्यग्दर्शन, आत्मस्वरूप का संशय, विमोह, विभ्रम रहित परिज्ञान और आत्मस्वरूप में स्थिति सम्यक्चारित्र है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि निश्चय मोक्षमार्ग साध्य है और व्यवहार मोक्षमार्ग साधन है। व्यवहार मोक्षमार्ग पूर्वक निश्चय मोक्षमार्ग होता है। पृथक् पृथक् से रत्नत्रय के अवयव भी इसी प्रकार समझने चाहिए। अर्थात् व्यवहार सम्यग्दर्शन, निश्चय सम्यग्दर्शन का कारण है, व्यवहार सम्यग्ज्ञान, निश्चय सम्यग्ज्ञान का हेतु है और व्यवहार सम्यक्चारित्र निश्चय सम्यक्चारित्र का साधन है। प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम तीनों प्रमाणों से व्यवहार और निश्चय मोक्षमार्ग, साधन व साध्य रूप में हैं, दृष्टव्य है-

निश्चय व्यवहाराभ्यां मोक्षमार्गो द्विधा स्थितः।
तत्राद्यः साध्यरूपः स्याद् द्वितीयस्तस्यसाधनः॥ तत्त्वार्थसार उपसंहार 2
णो ववहारेण विणा णिच्छयसिद्धी कया वि णिछिट्ठा।
साहण हेऊ जम्हा तम्हा य सो भणिय ववहारो॥ द्रव्यस्वभाव प्रकाशक नयचक्र॥
जइ जिणमयं पवज्जह ता मा ववहारणिच्चए मुयह।
एक्केण विणा छिज्जइ तित्थं अण्णेण उण तच्चं॥

अर्थ- मोक्षमार्ग दो प्रकार का है, 1. निश्चय 2. व्यवहार। निश्चय साध्य है और व्यवहार उसका साधन है। व्यवहार के बिना निश्चय की सिद्धि कदापि निर्दिष्ट नहीं की गई है। साधन हेतु होने से ही उसे व्यवहार कहा है। यदि तुम जिनमत की प्रभावना करना चाहते हो तो व्यवहार और निश्चय इनमें में किसी का भी परित्याग न करो। यदि निश्चय को छोड़ोगे तो तत्त्व का नाश होगा और व्यवहार को छोड़ने से तीर्थ का ही नाश होगा।

अशुभ से निवृत्ति और शुभ में प्रवृत्ति व्यवहार सम्यक्चारित्र है वह व्रत, समिति, गुप्ति रूप है। जहाँ न तो कुछ मन से सोचा जाता है न वाणी का प्रयोग होता है और शरीर से भी कोई चेष्टा नहीं की जाती है वह आत्मस्थिति रूप, निश्चय गुप्ति रूप निश्चय सम्यक् चारित्र है।

उपर्युक्त विवेचन से यह प्रकट होता है कि रत्नत्रय रूप मोक्षमार्गीय भाव एवं तद्नुरूप क्रिया मिलकर मुक्ति की योग्यता उत्पन्न की जाती है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मोक्ष के नियामक कारण हैं। मुक्ति योग्य भावों की जो भी गवेषणा होगी वह सब रत्नत्रय में ही समाविष्ट है। मोक्षमार्ग में गति, भेद से अभेद की, सविकल्प से निर्विकल्प दशा की ओर है। जब योगी का उपयोग शुद्ध, अभेद और स्थिर हो जाता है तो मोहनीय पर विजय प्राप्ति पूर्वक केवलज्ञान की उपलब्धि हो जाती है। सकल परमात्मा स्वरूप प्रकट हो जाता है। पुनश्च अपेक्षित रूप में जीवन्मुक्त रहकर अयोगी होकर मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

मुक्ति योग्य जिन भावों की अपेक्षा है वे सभी सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र एवं तप को मिलाकर चार आराधनाओं के रूप में सद्भावित हैं कहा भी गया है-

सिद्धे जयप्पसिद्धे चउव्विहाराहणा फलं पत्ते।
वन्दित्ता अरहंते वोच्छं आराहणा कमसो॥
उज्जोवणमुज्जवनं णिव्वाणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया॥ मूलाराधना 1-2॥

अन्य भी विस्तार से देखा जाये तो उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन और ब्रह्मचर्य ये भाव भी मोक्ष हेतु आवश्यक हैं। यह मुख्य रूप से श्रमण का धर्म है गौण रूप से गृहस्थ का भी। जैनधर्म में तप, संवर और मोक्षोपयोगी निर्जरा (अविपाकनिर्जरा) का मुख्य हेतु है। **इच्छा निरोधस्तपः** तथा **कर्म क्षय हेतुं प्रतपनं तपः** इन लक्षणों से भी यह प्रकट है। तप से भेदों में ध्यान रूप अंतरंग तप जो पूर्व से ही एवं साक्षात् रूप से मोक्ष का कारण है। परिषहजय, अनुप्रेक्षा, समितियाँ, समता या वीतरागता, निजात्मतत्त्व लीनता, परमसमाधि, छः आवश्यक प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, स्तुति, वन्दना, व्युत्सर्ग श्रमण का तेरह प्रकार चारित्र रूप परिणाम, 28 मूलगुण आदि सभी मुक्ति योग्य भावों से सिद्धि प्राप्त होती है। अनेकों जन्मों की परम्परा में भावित ज्ञान, ध्यान इसका विषय है।

परम्परा दृष्टि से चिन्तन के अन्तर्गत गृहस्थ का अणुव्रत, गुणव्रत, शिक्षाव्रत व सल्लेखना आदि भी मोक्षोपयोगी भाव हैं। मुनिधर्म का अनुरागी गृहस्थ तीर्थंकर प्रकृति तक का बन्ध कर मोक्षमार्ग को प्रशस्त करता है।

वर्तमान पञ्चमकाल में भी मोक्षमार्ग परम्परा रूप से प्रवर्तित है। आज भी श्रमण मोक्षमार्ग, आत्मस्वभाव में स्थित हैं, अवलोकनीय है-

भरहे दुक्खमकाले धम्मज्झाणं हवेइ साहुस्स।
तं अप्पसहावट्ठिदं ण हि मण्णइ सो वि अण्णाणी॥ मोक्षपाहुड 76
अज्जवि तिरयण सुद्धा अप्पा झायेइ लहइ इन्दत्तं।
लोयन्तिय देवत्तं तत्थ चुया णिव्वुदिं जंति॥ मोक्षपाहुड 77

ऊपर हमने भगवतीआराधना के उद्धरणों के अन्तर्गत रत्नत्रय एवं तप के उद्योतन, उद्यवन, निर्वहण, साधन और निस्तरण का उल्लेख किया है, उनका पालन श्रमण आज भी करते हैं। साक्षात् इस काल में मुक्ति संभव नहीं है, किन्तु परम्परा से सिद्धि तो स्वीकार्य ही है।

गुणस्थानों में भाव

ज्ञातव्य है कि गुणसण्णा मोहजोगभवा के अनुसार ही मिथ्यात्व, कषाय और योग की हानि से मोक्षमार्ग होता है। प्रथम गुणस्थान में करणलब्धि परिणामों में अधःकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्ति करण (सम्यक्त्व सम्बन्धी) से श्रद्धा गुण की शुद्धि होकर सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है। दर्शनमोहनीय का उपशम, क्षयोपशम और क्षय होने से मुक्ति योग्य नियामकता आती है। पुनः चौथे से लेकर पाँचवें तक गृहस्थ अवस्था (अव्रत सम्यग्दृष्टि, देशव्रत) तथा आगे प्रमत्तसंयत एवं अप्रमत्तसंयत के भाव एवं सातवें में ही सातिशय अवस्था में अध:प्रवृत्तकरण आगे अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में श्रेणी आरोहण कर सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तमोह तथा क्षीणमोह में आरोहण कर एकत्ववितर्क अवीचार के बल से घातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञान प्रकाश से लोकालोक को आलोकित करते हैं व सूक्ष्म क्रियाप्रतिप्राती से अयोग गुणस्थान में प्रवेश कर व्युपरत क्रियानिवृत्ति द्वारा अंतिम समय में संपूर्ण अवशिष्ट कर्मों का नाश कर योगी मुक्ति प्राप्त करते हैं। इस संपूर्ण प्रक्रिया में अशुभोपयोग का त्याग, शुभोपयोग का ग्रहण तथा शुद्धोपयोग द्वारा सम्पूर्ण की निवृत्ति एवं आत्मोपलब्धि रूप परिणाम ही दृष्टिगोचर होते हैं।

मोक्ष के हेतु धर्मध्यान व शुक्लध्यान का अनिवार्य रूप से महत्त्व है। आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय, संस्थानविचय ये धर्मध्यान के चार भेद हैं। शुक्लध्यान के चार भेद, पृथक्त्ववितर्कवीचार, एकत्ववितर्क अवीचार, सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती और व्युपरतक्रिया निर्वति या समुच्छिन्न क्रिया हैं। गुणस्थानों की परिपाटी से इनका सद्भाव आगम से दृष्टव्य है। वर्तमान में शुक्लध्यान का अभाव है।

उपर्युक्त प्रकार मुक्ति के योग्य चतुष्टय, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के विषय में कुछ विवरण दिया है। विषय विस्तृत है तथा भाव सम्बन्धी विवेचन तो शास्त्रों की परिपाटी में विशाल रूप में दृष्टव्य है। अपनी अल्प बुद्धि अनुसार जो कुछ निरूपण है उसमें त्रुटियाँ संभव हैं, सुधी जन सुधार करेंगे यह आशा है। शास्त्र तो समुद्र हैं।

श्रुताराधना : एक अनुपम कृति

प्रवचनकर्ता	:	प.पू. आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज
प्रस्तुति एवं संपादन	:	पं. मूलचन्द लुहाड़िया, किशनगढ़ डॉ. चेतनप्रकाश पाटनी, जोधपुर
प्रकाशन	:	श्री कुण्डलपुर दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, कुण्डलपुर (दमोह)
प्राप्तिस्थान	:	श्री कुण्डलपुर दि. जैन तीर्थकर कमेटी पो. कुण्डलपुर, जि. दमोह (म.प्र.) 470773 श्री मूलचन्द लुहाड़िया जयपुर रोड, मदनगंज किशनगढ़ (राज.) 305801
मूल्य	:	40 रू.

वर्षायोग : चातुर्मास-2008

साहित्यमनीषी ज्ञानवारिधि दिगंबर जैनाचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के द्वारा शिक्षित-दीक्षित जैन श्रमण-परंपरा के आदर्श, संत शिरोमणि जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज तथा उनके द्वारा दीक्षित शिष्यों का वीर निर्वाण संवत् २५३४, विक्रम संवत् २०६५ सन् २००८ का चातुर्मास विवरण :

(1) संत शिरोमणि १०८ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज मुनिश्री समयसागरजी महाराज, मुनिश्री योगसागर जी महाराज, मुनिश्री प्रसादसागर जी महाराज, मुनिश्री अभयसागर जी महाराज, मुनिश्री प्रशस्तसागर जी महाराज, मुनिश्री पुराणसागरजी महाराज, मुनिश्री प्रबोधसागरजी महाराज, मुनिश्री प्रभातसागर जी महाराज, मुनिश्री संभवसागर जी महाराज, मुनिश्री अभिनंदनसागरजी महाराज, मुनिश्री पद्‌मसागरजी महाराज, मुनिश्री श्रेयांससागरजी महाराज, मुनिश्री अनंतसागरजी महाराज, मुनिश्री धर्मसागरजी महाराज, मुनिश्री शांतिसागरजी महाराज, मुनिश्री अरहसागरजी महाराज, मुनिश्री मल्लिसागरजी महाराज, मुनिश्री सुव्रतसागर जी महाराज, मुनिश्री विरागसागरजी महाराज, मुनिश्री क्षीरसागरजी महाराज, मुनिश्री धीरसागरजी महाराज, मुनिश्री आगमसागरजी महाराज, मुनिश्री महासागरजी महाराज, मुनिश्री विराटसागरजी महाराज, मुनिश्री विशालसागरजी महाराज, मुनिश्री विशालसागरजी महाराज, मुनिश्री शैलसागरजी महाराज, मुनिश्री अचलसागरजी महाराज, मुनिश्री पुनीतसागरजी महाराज, मुनिश्री अविचलसागरजी महाराज, मुनिश्री विशदसागरजी महाराज, मुनिश्री धवलसागरजी महाराज, मुनिश्री अनुभवसागरजी महाराज, मुनिश्री दुर्लभसागरजी महाराज, मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज, मुनिश्री अतुलसागरजी महाराज, मुनिश्री भावसागरजी महाराज, मुनिश्री आनंदसागरजी महाराज और मुनिश्री सहजसागरजी महाराज।

कुल : ३९ (आचार्यश्रीजी+३८ मुनिराज तथा ब्रह्मचारीगण)

- आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के द्वारा दीक्षित प्राय: सभी साधुगण बाल ब्रह्मचारी हैं। जैन श्रवण परंपरा के ज्ञात इतिहास-जानकारी में यह प्रथम संघ हो सकता है जिनमें वर्तमान दीक्षित २५७ साधु एवं आर्यिकाएँ भी प्राय: बाल ब्रह्मचारिणी हैं।
- आचार्य श्री आज्ञानुसार देश के विभिन्न नगरों में लगभग १०० बाल ब्रह्मचारी भाई एवं ३०० बाल ब्रह्मचारिणी बहनें भी चातुर्मास कर रही हैं।
- आचार्य श्री जी के द्वारा प्रतिदिन प्रात:काल 'महाबंध' पुस्तक संघस्थ साधुओं के लिए एवं अपरान्ह कातंत्र व्याकरण का स्वाध्याय कराते हैं।
- प्रत्येक रविवार एवं विशिष्ट पर्व के दिनों में आचार्यश्री का सार्वजनिक प्रवचन माध्याह्न 3 बजे से होता है।
- वर्तमान में आचार्यश्री से दीक्षित शिष्यों के मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों में चातुर्मास हो रहे हैं।
- चातुर्मास स्थली : श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र रामटेक, जिला नागपुर (महा.) ४११११०६
- संपर्क सूत्र :- अध्यक्ष : सतीशजी कोयला वाले (०९३७१२-२७३७३), कोषाध्यक्ष-आवास : प्रकाश वैसाखिया (०९८२२९-२७२५५), कार्यालय : प्रदीप जैन (०७११४-२५५११७), कमलकांत (०९४२०२-४९६४४), रमेश मोदी (०९३२६१-७६१०५)

(२) मुनि श्री नियमसागरजी महाराज : मुनिश्री वृषभसागरजी महाराज
कुल : २ (२ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली-श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर मजगाँव, जि. बेलगाम (कर्नाटक) ५९०००८
संपर्क सूत्र : पारस पाटिल (०९४४८१-९३७०५), नाभिराय पाटिल (९९६४३-५८७३३), प्रद्युम्नराज पाटिल (०९३४२७-७८१०८)

(३) मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज, मुनिश्री भव्यसागरजी महाराज (दीक्षागुरु ऐ. नेमीसागरजी)
कुल : ४
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर

गढ़ाकोटा, जिला सागर (म.प्र.)- ४७०२२९
संपर्क सूत्र : अध्यक्ष अरुण मलैया (०७५८५-२५८८८८, ९३२९४-१४१६९)

(४) मुनिश्री गुप्तिसागर जी महाराज (उपाध्यक्ष पद आचार्य श्री विद्यानंदजी महाराज)
कुल : १ मुनिराज (ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा, जिला बड़वानी (म.प्र.) ४५१५५१
संपर्क सूत्र : इंद्रजीत मंडलोई (९४२५०-९०३८५, ०७४९०-२८२१३३)

(५) मुनिश्री सुधासागरजी महाराज : क्षुल्लक श्री गंभीरसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री धैर्यसागरजी महाराज
कुलः ३ (१ मुनिराज, २ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र, ज्ञानोदय नगर, नारेली, जि. अजमेर (राज.) ३०५००१
सम्पर्क सूत्र : निहालजी पहाड़िया-अध्यक्ष (९८२९०-७०७८८), कार्यालय : ०१४५-२६७१०१०-११, पिंकू गादिया (०९४१४०-०३४३१)

(६) मुनिश्री समतासागरजी महाराज : ऐ. श्री निश्चयसागरजी महाराज
कुल : २ (१ मुनिराज, १ ऐलक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर, वाशिम, जिला अकोला (महाराष्ट्र)-४४४५०५
संपर्क सूत्र : हरीश वज (०४२११-६०८६६), प्रवीण पाटनी (९४२११-९३१२५), वीरेन्द्र जोशी (९४२३४-३०९०३)

(७) मुनिश्री स्वभावसागरजी महाराज : क्षु. श्री प्रशांतसागरजी (गुरु स्वभावसागरजी)
कुल : २ (१ मुनिराज, १ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन वारा सिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८८३३१
संपर्क सूत्र : प्रकाशजी (०७६३३-२५३४५४, २५३२१८), अध्यक्ष-सुमेरचंदजी (२५३५०६)

(८) मुनिश्री सरलसागरजी महाराज,क्षु. देवानंदसागरजी म.
कुलः २ मुनिराज (१ मुनि, १ क्षुल्लक ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सांवलिया पार्श्वनाथ, करगुवाँजी, जिला झाँसी (उ.प्र.)-२८४१२८
संपर्क सूत्र : प्रवीण जैन (९४५००-७१६३२), कार्यालय (०५१७-२३२००४४)

(९) मुनिश्री प्रमाणसागरजी, क्षु. सम्यक्त्वसागरजी (गुरु उपाध्याय ज्ञानसागरजी) महाराज
कुल : २ (१ मुनि, १ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन भवन, जैन मंदिर मार्ग, गया (बिहार)-८२३००१
सम्पर्क सूत्र : मंदिर : ०६३१-२४३३५५५, विमलकुमार सेठी (०९८३५८-४२१९७), देवेन्द्र कुमार अजमेरा (०९४३१२-२४५५५)

(१०) मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज : ऐ, अर्पणसागरजी (गुरु आर्जवसागरजी महाराज)
कुलः २ (१ मुनिराज, १ ऐलक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर, नया बाजार, ग्वालियर (म.प्र.) ४७४००१
संपर्क सूत्र : अजय जैन (९४२५१-१४८४६), कार्यालय : ०७५१-२४३६३७४

(११) मुनिश्री पवित्रसागरजी, मुनिश्री प्रयोगसागरजी
कुल : २ (२ मुनि, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर भाटापारा, जिला रायपुर (छत्तीसगढ़) ४९३११८
सम्पर्क सूत्र : प्रकाश गरीरिया (०७७२४-२२२१३५), अशोकजी (९४२५५-२३६०४), प्रकाश मोदी (०९४२५२-११०२४)

(१२) मुनि श्री चिन्मयसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री सुपार्श्वसागरजी महाराज
कुल : २ (१ मुनिराज, १ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन नागौरी मंदिर, धान मंडी, कुचामन सिटी, जि. नागौर (राज.)-३४१५०८
संपर्क सूत्र : ब्र. अभय भैया (०९४१४१-१७७८५), विनोद झांझरी (९४१४१-१७५३०)

(१३) मुनिश्री पावनसागरजी महाराज, क्षु. सुभद्रसागरजी म.
कुल : २ (१ मुनिराज, १ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर महाराजपुर,

तह. देवरी, जिला सागर (म.प्र.)-४७०२२६
सम्पर्क सूत्र : दिनेश सौंधिया (०७५८६-२२२१८१), महेन्द्र सौंधिया (९४२५६-३७१२२)

(१४) मुनिश्री सुखसागरजी महाराज
कुलः १ (१ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर कलभावी जिला धारवाड़ (बसदि)
संपर्क सूत्र : अनंत उपाखे (९९६४१-७८५९५)

(१५) मुनिश्री मार्दवसागरजी महाराज
कुल : १ (१ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर बांदकपुर जिला दमोह (म.प्र.)-४७०६६४
संपर्क सूत्र : जिनेन्द्र सिंघई (९४२४४-०५७६०, ०७८९२-२१०२६०), दीपक (९४२४४-२३७०३)

(१६) मुनिश्री उत्तमसागरजी महाराज
कुल : १ (१ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर शिरदवाड़ तह. शिरोल, जिला कोल्हापुर (महा.)

(१७) मुनिश्री प्रशांतसागरजी महाराज, मुनिश्री निर्वेगसागरजी म.
कुल : २ (२ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र नेमगिरि संस्थान, मेनरोड, नेमगिरि, जिंतूर, जिलापरभणी (महाराष्ट्र) ४३१५०९
संपर्क सूत्र : फोन : ०२४५७-२२०११३, मो.: ०९३७२३-८९१७०

(१८) मुनिश्री विनीतसागरजी, मुनिश्री चंद्रप्रभसागरजी
कुल : २ (२ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन महावीर भवन बारामती, जिला पुणे (महा.)
सम्पर्क सूत्र : कार्यालय (०२११२-२२१६६६), बालचंद संघवी (९८२२४-५९२७९), अमर गाँधी (९८८९३-११५१०)

(१९) मुनिश्री निर्णयसागरजी, मुनिश्री प्रणम्यसागरजी, मुनिश्री चंद्रसागरजी, मुनिश्री सुमतिसागरजी, मुनिश्री पूज्यसागरजी, मुनिश्री विमलसागरजी, मुनिश्री सौम्यसागरजी
कुल ७ (७ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, बेगमगंज, जिला रायसेन (म.प्र.)-४६४८८१
सम्पर्क सूत्र : मनीष सिंघई (९४२५४-३९७५३), देवेन्द्रजी (०७४८७-२७२३७३, ९४०६५-४६३२६)

(२०) मुनिश्री प्रबुद्धसागरजी महाराज, मुनि अनंतानंतसागरजी
कुल : २ (२ मुनिराज ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर लार्डगंज, जबलपुर (म.प्र.)-४८२ ००२
सम्पर्क सूत्र : राजेश जैन (०७६१-२९०२०२०)

(२१) मुनिश्री पुण्यसागरजी महाराज, मुनिश्री नामिसागरजी महाराज
कुल : २ (२ मुनि, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर कलगट्गी, जिला धारवाड़ (कर्नाटक)

(२२) मुनिश्री पायसागरजी महाराज
कुल : १ (१ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर लक्ष्मेश्वर, सोमेश्वर टेम्पल रोड, तालुका सिरहट्टी, जिला हावेरी (कर्नाटक) ५८२११६
संपर्क सूत्र : भरतराज बारीगाली (०९४४८२-७२२७१), (फोन : ०८४८७-२७२२७१)

(२३) मुनिश्री अक्षयसागरजी, मुनिश्री सुपार्श्वसागरजी, मुनिश्री नेमीसागरजी
कुल : ३ (३ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर गाँवभाग, जिला सांगली (महा.)
सम्पर्क सूत्र : कार्यालय (०२३३) २३३३१०८, उदय पाटिल (९९६०३-४६१९४), राहुल पाटिल (९८६०९-२२३६३)

(२४) मुनिश्री अजितसागरजी, ऐलक विवेकानंदसागरजी
कुल : २ (१ मुनिराज, १ ऐलक)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन सिंघईजी बड़ा मंदिर, शाहगढ़, जिला सागर (म.प्र.) ४७०३३९

संपर्क सूत्र : विमल सिंघई (९४२४४-४१९४३), (फोन : ०७५८३-२५९२९१)

(२५) मुनिश्री पुष्पदंतसागरजी, मुनि कुंथुसागरजी महाराज
कुल : २ (२ मुनिराज ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दि. जैन गंज मंदिर, राहतगढ़, जिला सागर (म.प्र.)- ४७०११९
सम्पर्क सूत्र : कमल चौधरी (९३१९१-४६४८१), प्रदीपजी (०७५८४-२५४२६३), राकेशजी (२५४२७३)

(२६) आर्यिकाश्री गुरुमति माताजी : आर्यिकाश्री उज्ज्वलमतिजी, आर्यिकाश्री सूत्रमतिजी, आर्यिकाश्री शीतलमतिजी, आर्यिकाश्री सारमतिजी, आर्यिकाश्री साकारमतिजी, आर्यिकाश्री सूक्ष्ममतिजी, आर्यिकाश्री शांतमतिजी, आर्यिकाश्री जागृतमतिजी, आर्यिकाश्री कर्तव्यमतिजी, आर्यिकाश्री चैत्यमतिजी, आर्यिकाश्री पुनीतमतिजी, आर्यिकाश्री धुव्रमतिजी, आर्यिकाश्री पारमतिजी, आर्यिकाश्री आगममतिजी, आर्यिकाश्री श्रुतमतिजी माताजी।
कुल : १६ (१६ आर्यिकाएँ एवं बाल ब्रह्मचारिणी बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन महावीर विहार, गंजबासौदा, जिला विदिशा (म.प्र.) ४६४२२१
सम्पर्क सूत्र : श्रेयमलजी (५७५९४-२२०४६४, २२१७९६), शिखरचंदजी (२२२४५१)

(२७) आर्यिकाश्री दृढ़मतिजी : आर्यिकाश्री पावनमतिजी, आर्यिकाश्री साधनामतिजी, आर्यिकाश्री विलक्षणमतिजी, आर्यिकाश्री वैराग्यमतिजी, आर्यिकाश्री अकलंकमतिजी, आर्यिकाश्री निकलंकमतिजी, आर्यिकाश्री आगममतिजी, आर्यिकाश्री स्वाध्यायमतिजी, आर्यिकाश्री प्रशममतिजी, आर्यिकाश्री मुदितमतिजी, आर्यिकाश्री सहजमतिजी, आर्यिकाश्री संयममतिजी, आर्यिकाश्री सत्यार्थमतिजी, आर्यिकाश्री सिद्धमतिजी, आर्यिकाश्री समुन्नतमतिजी, आर्यिकाश्री शास्त्रमति माताजी, आर्यिकाश्री तथ्यमतिजी, आर्यिकाश्री वात्सल्यमतिजी, आर्यिकाश्री पथ्यमतिजी, आर्यिकाश्री संस्कारमतिजी, आर्यिकाश्री विजितमतिजी, आर्यिकाश्री आप्तमतिजी, आर्यिकाश्री स्वभावमतिजी, आर्यिकाश्री धवलमतिजी, आर्यिकाश्री समितिमतिजी, आर्यिकाश्री मननमतिजी।
कुल : २७ (२७ आर्यिकाएँ एवं बाल ब्रह्मचारिणी बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, बंडा, जिला सागर (म.प्र.)- ४७०३३५
सम्पर्क सूत्र : महेन्द्र कुमारजी-अध्यक्ष (०८९३७-५३२७०), राहुल जैन (९८९३६-२३७६०)

(२८) आर्यिकाश्री मृदुमतिजी : आर्यिकाश्री निर्णयमतिजी, आर्यिकाश्री प्रसन्नमतिजी
कुल : ३ (३ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्म, बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन मंदिर, मालथौन, जिला सागर (म.प्र.)-४७०४४१
संपर्क सूत्र : सुभाषजी-अध्यक्ष (९४२४४-९२७०५, ०७५८१-२७१२५३)

(२९) आर्यिकाश्री ऋतुमतिजी, आर्यिकाश्री सरलमतिजी, आर्यिकाश्री शीलमतिजी, आर्यिकाश्री असीममतिजी, आर्यिकाश्री गौतममतिजी, आर्यिकाश्री निर्माणमतिजी, आर्यिकाश्री मार्दवमतिजी, आर्यिकाश्री मंगलमतिजी, आर्यिकाश्री चारित्रमतिजी, आर्यिकाश्री श्रद्धामतिजी, आर्यिकाश्री उत्कर्षमति माताजी।
कुल : ११ (११ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्मचारिणी बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, वीनागंज, जिला गुना (म.प्र.)-४७३११५
संपर्क : धर्मेन्द्रजी-अध्यक्ष (०७५४६-२४०३६१), संजीव जैन-मंत्री (२४०५८१), अजय जैन (२४०११८), ९४२४-३५०४७

(३०) आर्यिकाश्री तपोमतिजी, आर्यिकाश्री सिद्धांतमतिजी, आर्यिकाश्री नम्रमतिजी, आर्यिकाश्री विनम्रमतिजी, आर्यिकाश्री अतुलमतिजी, आर्यिकाश्री पुराणमतिजी, आर्यिकाश्री अनुगममतिजी, आर्यिकाश्री उचितमतिजी, आर्यिकाश्री विनयमतिजी, आर्यिकाश्री संगतमतिजी, आर्यिकाश्री लक्ष्यमतिजी माताजी।
कुल : ११ (११ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्मचारिणी बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर, बड़ा मलहरा, जिला छतरपुर (म.प्र.)-४७१३३१
सम्पर्क सूत्र : महेशजी-अध्यक्ष (९४२४१-४३९०४), धन्यमुमार जैन आचार्य-मंत्री

(९४२४६×७२३०७), ०७६८९-२५२१८५, ९८२६५-५४९५२, गजेन्द्रजी-कोषाध्यक्ष (९४२४६-७४३३१)

(३१) गणिनी आर्यिका सत्यमतिजी (गणिनी पद-आचार्य सुकुमालनंदीजी महा.), आर्यिका हेमश्री, आर्यिका हर्षित
चातुर्मास स्थली - श्री अजिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, शाहपुर, अहमदाबाद (गुजरात)-३८०००१
संपर्क सूत्र : ९९७९४-४६५३९, ०७१-२६६२७९६३, २५६२३५४१

(३२) आर्यिकाश्री गुणमतिजी, आर्यिकाश्री ध्येयमतिजी, आर्यिकाश्री आत्ममतिजी, आर्यिकाश्री संयतमति माताजी।
कुल : ४ (४ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्म, बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पठारी, जिला विदिशा (म.प्र.) ४६४३३७
संपर्क सूत्र : अरुण सहले पत्रकार (९८२६१-३७८८३, ०७५९३-२४५४४), राकेश जैन-अध्यक्ष (२४५४३२, ९८२६५-३११७२)

(३३) आर्यिकाश्री प्रशांतमतिजी : आर्यिकाश्री विनतमतिजी, आर्यिकाश्री शैलमतिजी, आर्यिकाश्री विशुद्धमतिजी
कुल : ४ (४ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्म. बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, खनियाधाना, जिला शिवपुरी (म.प्र.) ४७३९९९
संपर्क सूत्र : मंदिर (०७४९७-२३५००६), सुरेश जैन मारौरा शिवपुरी (०७४९२-२३३३६४), ब्र. विनय भैया (मो. ९९८१७-००७८९), मनोज जैन चौधरी हार्डवेयर (९९७७९-३४४११)

(३४) आर्यिका श्री पूर्णमतिजी : आर्यिकाश्री शुभ्रमतिजी, आर्यिकाश्री साधुमतिजी, आर्यिकाश्री विशदमतिजी, आर्यिकाश्री विपुलमतिजी, आर्यिकाश्री मधुरमतिजी, आर्यिकाश्री कैवल्यमतिजी, आर्यिकाश्री सतर्कमतिजी
कुल : ८ (८ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्म. बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, शिवनगर, जिला जबलपुर (म.प्र.)-४८२ ००२
संपर्क सूत्र : सुनील जैन तारादेही (९४२५८-३६७९५), अध्यक्ष-सुनील जैन मंगल हाट (९४२५१-६०५९१)

(३५) आर्यिकाश्री अनंतमति माताजी, आर्यिकाश्री विमलमतिजी, आर्यिकाश्री निर्मलमतिजी, आर्यिकाश्री शुक्लमतिजी, आर्यिकाश्री आलोकमतिजी, आर्यिकाश्री संवेगमतिजी, आर्यिकाश्री निर्वेगमतिजी, आर्यिकाश्री विनयमतिजी, आर्यिकाश्री समयमतिजी, आर्यिकाश्री शोधमतिजी, आर्यिकाश्री शाश्वतमतिजी, आर्यिकाश्री सुशीलमतिजी, आर्यिकाश्री सुसिद्धमतिजी, आर्यिकाश्री सुधारमतिजी, आर्यिकाश्री उदारमतिजी, आर्यिकाश्री संतुष्टमतिजी, आर्यिकाश्री निकटमतिजी, आर्यिकाश्री अमितमतिजी, आर्यिकाश्री निसर्गमतिजी, आर्यिकाश्री अविकारमतिजी माताजी ।
कुल : २० (२० आर्यिका, ब्रह्मचारिणी बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, नवापारा (राजिम), जिला रायुपर (छत्तीसगढ़)-४९३८८१
सम्पर्क सूत्र : अभयजी-अध्यक्ष (९८२६५-०६०४१), ०७७०१-२३३०४१, २३३६५२

(३६) आर्यिका कुशलमतिजी, आर्यिका धारणामतिजी,
कुल : २ (२ आर्यिका, ब्रह्मचारिणी बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर चरगुवाँ, जिला जबलपुर (म.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : ज्ञानचंदजी (०७६२१-२७१५३१), संजय (२७७६३१)

(३७) आर्यिकाश्री प्रभावनामतिजी : आर्यिका भावनामतिजी, आर्यिकाश्री सदयमतिजी, आर्यिका भक्तिमति माताजी
कुल : ४ (४ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्म. बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, तालवेहट (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : आदेश जैन (९४५१२-६५१०३)

(३८) आर्यिकाश्री चिन्तनमतिजी, आर्यिकाश्री सौम्यमतिजी, आर्यिकाश्री सुशांतमतिजी, आर्यिकाश्री निष्काममतिजी, आर्यिकाश्री विरतमतिजी, आर्यिकाश्री तथामतिजी, आर्यिकाश्री उपशममतिजी
कुल : ७ (७ आर्यिकाएँ एवं बाल ब्रह्मचारिणी बहनें)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर वांदरी, जिला सागर (म.प्र.) ४७०४४२
सम्पर्क सूत्र : कमल कुमारजी जैन (०७५८१-२७२२३७, ९४२५६-९१४०२)

(३९) आर्यिकाश्री आदर्शमतिजी : आर्यिकाश्री दुर्लभमतिजी, आर्यिकाश्री अंतरमतिजी, आर्यिकाश्री अनुनयमतिजी,

आर्यिकाश्री अनुग्रहमतिजी, आर्यिकाश्री अक्षयमतिजी, आर्यिकाश्री अमूर्तमतिजी, आर्यिकाश्री अखंडमतिजी, आर्यिकाश्री अनुपममतिजी, आर्यिकाश्री अनर्घमतिजी, आर्यिकाश्री अतिशयमतिजी, आर्यिकाश्री अनुभवमतिजी, आर्यिकाश्री आनंदमतिजी, आर्यिकाश्री अधिगममतिजी, आर्यिकाश्री अनुभवमतिजी, आर्यिकाश्री आनंदमतिजी, आर्यिकाश्री अमन्दमतिजी, आर्यिकाश्री अभेदमतिजी, आर्यिकाश्री श्वेतमतिजी, आर्यिकाश्री अद्योतमतिजी, आर्यिकाश्री स्वस्थमतिजी, आर्यिकाश्री गंतव्यमतिजी, आर्यिकाश्री संवरमतिजी, आर्यिकाश्री पृथ्वीमतिजी, आर्यिकाश्री निर्मदमतिजी, आर्यिकाश्री विनीतमतिजी, आर्यिकाश्री मेरुमतिजी, आर्यिकाश्री परमार्थमतिजी, आर्यिकाश्री ध्यानमतिजी, आर्यिकाश्री विदेहमतिजी, आर्यिकाश्री अवायमतिजी, आर्यिकाश्री अदूरमतिजी माताजी ।

कुल : ३० (३० आर्यिकाएँ बाल ब्रह्म बहनें)+ ८० प्रतिभामंडल की ब्रह्मचारिणी बहनें

चातुर्मास स्थली : श्री छतारेलाल दिगम्बर जैन मंदिर गोटेगाँव, जिला नरसिंहपुर (म.प्र.)-४८७११८

संपर्क सूत्र : धर्मचंदजी (०७७९४-२८३१६७)

(४०) आर्यिका सकलमति माताजी

चातुर्मास स्थली : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, मुंगाणा, तह. धरियावद जिला उदयपुर (राजस्थान)

संपर्क सूत्र : खिमलालजी (९४१३०-२२३४८, ९४६०५-०८८८७)

(४१) आर्यिकाश्री अपूर्वमतिजी, आर्यिकाश्री अनुत्तरमतिजी, आर्यिकाश्री अगाधमति माताजी।

कुल : ३ (३ आर्यिकाएँ, बाल ब्रह्म. बहने)

चातुर्मास स्थली : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, अग्रवाल कॉलोनी, जबलपुर (म.प्र.)-४८२००२

संपर्क सूत्र : अरुण जैन कल्पतरु (९८९३४-९३५६७), राजकुमार जैन-अध्यक्ष (०७६१२-४१७१८८, २४१७६६१)

(४२) आर्यिकाश्री उपशांतमतिजी, आर्यिका ओंकारमतिजी, आर्यिका परममतिजी, आर्यिका चेतनमति माताजी।

कुल : ४ (४ आर्यिकाएँ, ब्रह्मचारिणी बहनें)

चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर सीहोरा, जिला जबलपुर (म.प्र.)-४८३२२५

संपर्क सूत्र : कालूरामजी सिंघई(०७६२४-२३०६२३, ९८२६४-७२६१९), सन्मति जैन (९४२४६-८६१०२), संजय (२३०५३२)

(४३) आर्यिकाश्री अकंपमतिजी : आर्यिकाश्री अमूल्यमतिजी, आर्यिकाश्री आराध्यमतिजी, आर्यिकाश्री अचिन्त्यमतिजी, आर्यिका अलोल्यमतिजी, आर्यिका श्री अनमोलमतिजी, आर्यिकाश्री आज्ञामतिजी, आर्यिका श्री अचलमतिजी, आर्यिकाश्री अवगममतिजी

कुल : ९ (९ आर्यिकाएँ, ब्रह्मचारिणी बहनें)

चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, बड़ा बाजार, पन्ना (म.प्र.)-४८८००१

सम्पर्क सूत्र : मो. ९४२५४-३८००९, त्रिलोकचंदजी (९४२५४-२५२०६), अनिलजी (०७७७३२-२५२६८५)

(४४) आर्यिका सुनयमति माताजी

कुल : १ (१ आर्यिका, ब्रह्मचारिणी बहनें)

चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर टोड़ी फतेहपुर, जिला झाँसी (उ.प्र.)

सम्पर्क सूत्र :

(४५) ऐलक दयासागरजी महाराज

कुल १ (१ऐलक, ब्रह्मचारीगण)

चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.) ४६२०३०

संपर्क सूत्र : अध्यक्ष-वृद्धिचंदजी (९९९३९-६८६३३), मंत्री-ओमप्रकाशजी (०७५५-२६४५०८६), कमल (९८९३३-३७९६०)

(४६) ऐलक निशंकसागरजी

कुल : १ (१ ऐलक, ब्रह्मचारीगण)

चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन शांतिनाथ मंदिर, स्टेशन, विदिशा (म.प्र.)-४६४००२

संपर्क सूत्र : महेन्द्र जैन बंटी (९८२७०-४६३४४), मुकेश जैन (९४२४१-४९९९२), (९४२४१-४८५९६)

(४७) ऐलक सिद्धांतसागरजी महाराज

कुल १ (१ ऐलक, ब्रह्मचारीगण)

चातुर्मास स्थली : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, धोवी

गली, आगर-मालवा, जि. शाजापुर (म.प्र.) ४६५४४१
सम्पर्क सूत्र : संजय जैन, भारत मेडिकल स्टोर्स (९४२५९-९११७२), दिनेश जैन, आरटीओ बस स्टैंड (९४२५०-८३७३१)

(४८) ऐलक संपूर्णसागरजी महाराज
कुल १ (१ ऐलक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, जैन बाग, सहारनपुर (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : सुषमा दीदी (०९८२६७-६८९१६)

(४९) ऐलक नम्रसागरजी महाराज
कुल १ (१ ऐलक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री नेमीचंद दिगम्बर जैन मंदिर, धनोरा, जिला सिवनी (म.प्र.) ४८०९९८
सम्पर्क सूत्र : दुलीचंदजी-अध्यक्ष (०७६९३-२८५४१७)

(५०) क्षु. ध्यानसागरजी महाराज
कुल : १ (१ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, तलोद, जिला सावरकांठा (गुजरात)
सम्पर्क सूत्र : अतुल शाह (९८९८४-२८००१)

(५१) क्षु. पूर्णसागरजी महाराज
कुल : १ (१ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, खंडेरी, तहसील बट्यागढ़, जिला दमोह (म.प्र.) ७७०६७३
सम्पर्क सूत्र : सोनू (९९८१९-६७६९१), प्रदीप (९९७७२-४२११५)

(५२) क्षु. नयसागरजी महाराज
कुल १ (१ क्षुल्लक, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर दादावाड़ी, कोटा (राजस्थान)
सम्पर्क सूत्र : फोन : ०७४४-२५०२०००

(५३) मुनिश्री ब्रह्मानंदसागरजी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, वही चौपाटी (पिपल्या मंडी के पास), जिला नीमच (म.प्र.)

(५४) मुनिश्री समाधिसागरजी महाराज
कुल १ (१ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, बीसपंथी कोठी, सोनागिरजी, जिला दतिया (म.प्र.)
संपर्क सूत्र : फोन-०७५२२-२६२३६०

(५५) मुनि श्री मंगलानंतसागरजी महाराज
कुल : १ (१ मुनिराज, ब्रह्मचारीगण)
चातुर्मास स्थली : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, नूतन विहार कॉलोनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : ब्र. जयकुमार निशांत (९४२५१-४१६९७), पं. मनीष (संजू) (९४२४३-४२३४३), फोन : (०७६८३-२४३१३८)

(५६) आर्यिकाश्री विज्ञानमती माताजी, आर्यिकाश्री वृषभमती माताजी, आर्यिकाश्री आदित्यमती माताजी, आर्यिकाश्री पवित्रमती माताजी, आर्यिकाश्री गरिमामती माताजी, आर्यिकाश्री संभवमती माताजी ।
कुल : ६ (६ आर्यिकाएँ)
चातुर्मास स्थली : श्री महावीर दिगम्बर जैन पाठशाला भवन, तेंदूपत्ता सागौनी, जिला-नरसिंहपुर (म.प्र.)
संपर्क सूत्र : प्रदीप जैन (अध्यक्ष) (०७७९१-५८५५९२, ९४२५४-६९३९२), संजय स्वदेशी (२५२४८७, ९४२५८-१५६५१), कस्तूर जैन (२५२०१८)

(५७) क्षुल्लक दिव्यानंदजी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, रौनक बाग, राणिम, अहमदाबाद (गुजरात)
सम्पर्क सूत्र : राजकुमार जैन (९४२६४-३३८०४, ९७२४१-७६६९२)

वर्तमान में आचार्यश्री विद्यासागरजी से दीक्षित शिष्य

७७ मुनि, १६६ आर्यिका, ६ ऐलक, ५ क्षुल्लक।
कुल : २५४
अन्य : ४ मुनि + ६ आर्यिका + २ ऐलक + ५ क्षुल्लक
कुल : २७३

(१ आचार्य, ८१ मुनि, १७४ आर्यिका, ८ ऐलक, १० क्षुल्लक)

ग्वालियर नगर में अपूर्व धर्म प्रभावना

- नरेन्द्र कुमार जैन

परमपूज्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज को सिद्धक्षेत्र सोनागिर जाकर नगर के श्रेष्ठजनों ने ग्वालियर में चार्तुमास एवं गोपाचल के दर्शन करने हेतु श्रीफल भेंट किए तथा निवेदन किया कि मुनि श्री अवश्य ही चार्तुमास कर हमारे जीवन को महान बनाए। मुझे जुलाई माह में समाचार मिला कि एक परम तपस्वी मुनिराज श्री आर्जवसागर जी महाराज अपने संघ सहित पहली बार ग्वालियर आ रहे हैं। मन में जिज्ञासा हुई कि चलकर मैं भी दर्शन करूँ। सिद्धक्षेत्र सोनागिर की पावनधरा से विहार करते हुए मुनि श्री जब ग्वालियर के निकट सिथोली (आई.आई.टी.एम.) पर पहुँचे तब उनके दर्शन करने का प्रथम सुअवसर मिला। जैसे ही मन और आँखों ने मिलकर मुनि श्री को निहारा, सम्पूर्ण हृदय और रोम-रोम पुलकित हो उठा। न जाने मुनि श्री में कौन सा अदृश्य जादू था कि उन्हें ठगा सा देखता ही रह गया उनके चरणों की रज मस्तक पर धारण करने का अवसर मिला। यही पहला पावन क्षण, सुअवसर मांगलिक घड़ी और शुभ नक्षत्र था जबकि उनकी पवित्र दृष्टि मुझ तुच्छ शरीर पर पड़ी। मुझे ऐसी अनुभूति हुई जैसे कि स्वाति नक्षत्र की बून्द सीप में गिरने पर मोती बनती है, वैसी ही उनकी करुणामयी आँखों से निकल रही पावन दृष्टि मेरे हृदय में प्रवेश कर गई। मैं धन्य धन्य हो गया जबकि उनकी दृष्टि का हृदय में स्पन्दन पाकर अंतस का मोती निगोड़ी आँखों से आँसू बनकर लुढ़क आया। बस यही पावन संयोग ऐसा बना कि उस दिन से लेकर आज तक मुनि श्री के दर्शन व उनकी अमृत वाणी सुनने से एक दिन भी वंचित नहीं हो पाया। महाराज श्री ने जैन स्वर्ण मंदिर में आठ दिन मंगल प्रवचन किये एवं ग्वालियर की ऐतिहासिक धरोहर गोपाचल पर्वत, त्रिशलामाता, नेमिगिरी, सिद्धाचल एवं जैन मंदिरों के दर्शन किए।

वर्षायोग स्थापना : हम सभी के असीम पुण्ययोग से भारत वर्ष के विख्यात जैनाचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज एवं ऐलक श्री अर्पण सागर जी महाराज का 17 जुलाई 08 को पावन वर्षायोग की स्थापना महावीर भवन कम्पू में हुई। संत शिरोमणी आचार्य विद्यासागर जी महाराज के शिष्यगणों का यह प्रथम बार वर्षायोग ग्वालियर नगर में स्थापित हुआ। सर्वप्रथम मंगलाचरण हुआ इसके पश्चात भगवान महावीर स्वामी जी एवं आचार्य श्री के फोटो का अनावरण व दीप प्रज्ज्वलित किया गया। चार्तुमास की स्थापना हेतु सकल जैन समाज ने श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। कलश की बोली लेने वाले प्रथम कलश स्थापना करता श्री रवीन्द्र जैन, श्रीमती शशी जैन द्वितीय कलश श्री राकेश, श्रीमती मंजू जैन एवं तृतीय कलश श्री चौ. निर्मल जैन, श्रीमती शीलादेवी जैन ने ली। इसके पश्चात मुनि श्री को शास्त्र भेंट व पाद प्रक्षालन हुए। मुनिश्री ने 'चार्तुमास का महत्व' विषय पर प्रकाश डाला प्रत्येक रविवार को जिनागम संगोष्ठी के कार्यक्रम भी निश्चित व प्रश्न मंच हुए। अंत में पूज्य मुनि श्री का मांगलिक प्रवचन हुआ जो नूतन था। धर्म के रहस्यों का जिस तरह सूक्ष्म विवेचना तत्व का

चिंतन और भावों की निर्मलता पवित्रता, शुद्धि का जो गंगा रूपी प्रवाह बहा, ऐसा जीवन में पहली बार सुना। अंत में हजारो नर-नारियों के साथ स्थापित कलषों को मुनि श्री के सानिध्य में भव्य शोभा यात्रा, धार्मिक गीतों के साथ बैंड बाजों के साथ नया बाजार जैन मंदिर पहुँची जहाँ कलशों को स्थापित किया गया एवं मुनि श्री संघ सहित मंदिर जी में विराजित हुए।

गुरु पूर्णिमा : दिनांक 18.7.08 श्री दिगम्बर जैन मंदिर नया बाजार से मुनि श्री की भव्य शोभायात्रा महावीर भवन पहुँची। भगवान महावीर स्वामी एवं आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चित्र का अनावरण करके दीप प्रज्ज्वलित किया गया। श्रीफल भेंट करने के पश्चात गुरु पूजन, आरती, मुनि श्री द्वारा गुरु शिष्य परम्परा पर प्रवचन हुए कि किस प्रकार इन्द्रभूति गौतम भगवान महावीर स्वामी से मिले तथा उन्हें प्रथम गणधर बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन मंदिर नया बाजार में जैन पाठशाला प्रारम्भ की गई।

वीर शासन जयन्ती : जैन मंदिर नया बाजार से एक विशाल शोभा यात्रा मुनि श्री के सानिध्य में कम्पू पहुँची जहाँ पर मंगलाचार, फोटो अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन, श्रीफल भेंट एवं मुनि श्री को शास्त्र भेंट किये गये। मुनिवर ने अपने मंगल प्रवचन में समवशरण और दिव्य धनि तथा मोक्ष का वर्णन किया। नया बाजार जैन मंदिर में मुनिश्री के प्रात: 8.30 बजे प्रवचन एवं तीर्थोदय काव्य पर एवं अपरान्ह में इष्टोपदेश एवं वारसाणुवेक्खा पर अध्यात्म से ओत प्रोत प्रवचन चल रहे हैं। श्री अनूप मिश्रा जल संसाधन मंत्री म.प्र. शासन ने आकर मुनिवर से आशीर्वाद लिया।

मोक्ष सप्तमी : दिनांक 8.8.08 को मुनि श्री का हजारों भव्य जनों के साथ सुप्रतिष्ठित केवली की वसुन्धरा गोपाचल पर्वत पर पदार्पण हुआ एवं वहीं भगवान पार्श्वनाथ की 42 फुट ऊँची प्रतिमा जो कि अतिशयकारी है का महामस्तिकाभिषेक किया गया। इसके पूर्व कमिश्नर ट्रान्सपोर्ट ने ध्वजारोहण किया, सिविल जज श्री ए.के. जैन, एडीशनल कलेक्टर आर.के. जैन ने आशीर्वाद लिया। मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन दर्शन एवं कल्याणक के बारे में विस्तार से बताया।

सामूहिक रक्षाबंधन पर्व : दिनांक 16.8.08 को मुनिराज श्री आर्जवसागर जी महाराज के साथ षोडशकारण पूजन करके श्रावकगण बैंड बाजों के साथ महिलाएँ एवं पुरुष केशरिया वस्त्रों में महावीर भवन पहुँचे जहाँ पर मुनि श्री के सान्निध्य में मुनि विष्णु कुमार जी एवं अकम्पनाचार्य की पूजा हुई। इसके पश्चात मंगलाचरण हुआ भगवान महावीर स्वामी, आचार्य विद्यासागर जी महाराज मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज एवं ऐलक श्री अर्पणसागर जी महाराज के चित्रों का अनावरण हुआ, दीप प्रज्ज्वलित किया, मंगलाचरण एवं श्रीफल भेंट किए गए। महाराजश्री ने अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की विष्णु कुमार मुनि ने कैसे रक्षा की इसके बारे में बताया।

भाव विज्ञान का विमोचन : दिनांक 3.8.08 को भाव विज्ञान के चतुर्थ अंक का विमोचन परम पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज जी के सानिध्य में म.प्र. शासन के जल संसाधन एवं उच्च शिक्षा मंत्री श्री अनूप मिश्रा द्वारा किया गया। इन अवसर पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक डॉ. सुधीर जैन भोपाल तथा

संपादक मंडल के सदस्य श्री अजीत जैन भोपाल भी उपस्थित थे। विमोचन के बाद ग्वालियर के अनेक सुधीजनों ने इस पत्रिका की आजीवन सदस्यता ग्रहण की।

महापर्वराज पर्यूषण : श्रावक साधना शिविर (दिनांक 4.9.08 से 14.9.08 तक) महावीर भवन में किया जा रहा है जिसमें सामूहिक पूजन एवं प्रवचन तथा शिविरार्थियों के लिये दिन में विशेष कक्षाएँ ध्यान, प्रतिक्रमण, गुरुभक्ति के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम रात्रि में आरती एवं विद्वानों के प्रवचन होंगे। ठहरने व शुद्धाहार की सामूहिक व्यवस्था रहेगी। सामूहिक क्षमावाणी अत्यंत ही हर्षोउल्लास के साथ मनाई जावेगी। अन्त में सम्मान समारोह होगा।

कल्पद्रुम महा अर्चना महोत्सव : दिनांक 2 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक जी.वाय.एम.सी. प्रांगण में सनातन धर्म मंदिर रोड पर मुनि श्री के सानिध्य में सम्पन्न होगा प्रतिष्ठाचार्य श्री गुलाबचन्द जी पुष्प एवं सह प्रतिष्ठाचार्य श्री जयकुमार 'निशांत' टीकमगढ़ के सानिध्य में सम्पन्न होगा। महाअर्चना में गजरथ, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्य सर्वोत्तम संस्थाओं द्वारा नृत्य, नाटिका एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रम होंगे। इसके लिये अलग से एक कमेटी बना दी गई जो पूर्ण रूप से अर्चना महोत्सव को श्रेष्ठता प्रदान करने का सार्थक प्रयास करेगी। इस कमेटी में संयोजक श्री बसंत जैन कोषाध्यक्ष श्री सि. महेश चन्द जैन (गुरु) महामंत्री श्री नरेन्द्र कुमार जैन उरी वाले एवं प्रचार मंत्र श्री ललित जैन हैं।

अहिंसा शाकाहार डाक्टर संगोष्ठी : दिनांक 25 एवं 26.10.2008 को आयोजित की जा रही है जिसमें देश के सुप्रसिद्ध डाक्टरों द्वारा शाकाहार पर सारगर्भित विचार रखे जावेंगे। दीपावली के सुअवसर पर कण्ठ पाठ प्रतियोगिता, महावीर निर्वाण महोत्सव व निष्ठापन दिवस मनाया जावेगा। दिनांक 2.11.2008 को पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

ग्वालियर के इतिहास में पहली बार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनिवर आर्जवसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में सैकड़ों लोगों का जीवन बदल रहा है उनके प्रभावपूर्ण व तत्व चिन्तन से ओत-प्रोत प्रवचनों की यह विशेषता रही कि उन्हें सुनने के लिए प्रतिदिन अपारजन समूह उमड़ने लगा। मुनिश्री के प्रवचनों से सैकड़ों लोगों के जीवन में ऐसा अदभुत प्रभाव पड़ा कि बड़ी संख्या में लोगों ने रात्रि भोजन व चमड़े के वेल्ट, जूते, चप्पल आदि त्यागने का जीवन पर्यन्त संकल्पों के साथ अनेक व्रतों को धारण कर लिया है। वही अजैन लोगों ने भी मद्य, मांस, मधु, गुटखा एवं सप्त व्यसन छोड़ने का नियम धारण कर लिया है। हम सभी यही प्रार्थना करते हैं कि उनकी साधना अनवरत चलती रहे और वह साधना हमें अनवरत संदेश देती रहे।

ऐसे विराट व्यक्तित्व, गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि नमन करता हुआ, उनके स्वास्थ्य की मंगल कामना करता हूँ कि उनकी आशीषमयी अनुकम्पा के लिए हम उनके प्रति श्रद्धावनत हैं।

- संयुक्त अध्यक्ष
वर्षायोग समिति, ग्वालियर

पावन वर्षा योग 2008 कलश स्थापना हेतु
दिनांक 16.6.08 को सकल जैन समाज ग्वालियर द्वारा निवेदन

पावन वर्षा योग 2008 कलश स्थापना हेतु
दिनांक 16.6.08 को सकल जैन समाज ग्वालियर द्वारा निवेदन

पावन वर्षा योग 2008 कलश स्थापना हेतु
दिनांक 16.6.08 को सकल जैन समाज ग्वालियर द्वारा निवेदन

ग्वालियर महापौर श्री विवेक नारायण शेजलकर जी चातुर्मास
दिवस पर धर्मसभा को संबोधित करते हुये ।

जिनालय संगोष्ठी - समाधि मरण का माहत्य विषय पर
बोलती हुई वक्ता श्रीमती श्वेता बाकलीवाल

मोक्ष सप्तमी के अवसर पर गोपाचल पर ध्वजारोहरण करते हुये
श्री एन.के. त्रिपाठी, ट्रान्सपोर्ट कमिशनर म.प्र.

गुरू पूर्णिमा दिवस पर सकल जैन मसाज के नर-नारी,
मुनिश्री आर्जवसागर जी की आरती करते हुये।

गुरू पूर्णिमा दिवस पर सकल जैन मसाज के नर-नारी,
मुनिश्री आर्जवसागर जी की आरती करते हुये।

रजि. क्रं. MPHIN21331/12/1/2007-TC

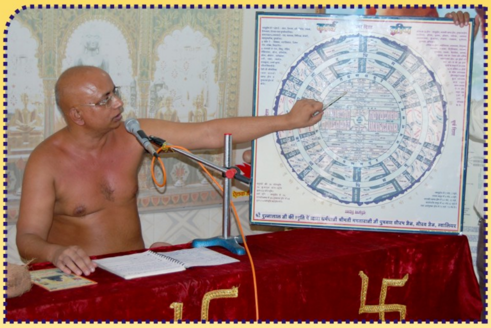

ढाई द्वीप का नक्शा समझाते हुये मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज

रक्षाबंधन वात्सल्य पर्व मनाते हुये ग्वालियर नगर के श्रावकगण

अपर कलेक्टर श्री आर.के. जैन जी, मुनि श्री आर्जवसागर जी को श्रीफल भेंट करते हुये।

सिविल जज श्री प्रदीप जैन का सम्मान करते हुये वर्षायोग के पदाधिकारी

भाव विज्ञान पत्रिका

परम संरक्षक

श्री गौतम काला, राँची
श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, दैहरादून
श्री पदमराज होळल, दावणगेरे
श्री सोहनलाल कासलीवाल, सलेम
श्री संजय जैन, राँची

संरक्षक

श्री विजय अजमेरा, रीवा
श्री के सी जैन, डि. एक्साइज आ., छतरपुर

आजीवन सदस्य

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी-दमोह
श्री जिनेन्द्र उस्ताद, दमोह
श्री नरेन्द्र जैन, सबलू दमोह
श्री निर्मल कुमार, इटोरिया
श्री संजय जैन, पथरिया दमोह
श्री अभय कुमार जैन, गुड्डे पथरिया, दमोह
श्री निर्मल जैन इटोरिया, दमोह
श्री राजेश जैन हिनोती, दमोह
श्री चंदूलाल दीपचंद काले, कोपरगाँव
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले, कोपरगाँव
श्री अशोक चंपालाल ठोले, कोपरगाँव
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल, कोपरगाँव
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले, कोपरगाँव
श्री अशोक पापड़ीवाल, कोपरगाँव
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल, कोपरगाँव
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल, कोपरगाँव
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल, कोपरगाँव
श्री श्रीपाल खुशीलचंद पहाड़े, कोपरगाँव
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े, कोपरगाँव
श्री प्रेमचंद कुपीवाले, छतरपुर
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर, छतरपुर
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स, छतरपुर
श्री एम.के. जैन, लघु उद्योग निगम, छतरपुर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले, छतरपुर
श्री कमल कुमार जतारावाले, छतरपुर
श्री मुन्नाचंद जैन, छतरपुर
श्री देवेन्द्र डयोढ़िया, छतरपुर
अध्यक्ष, महिला मंडल, डेरा पहाड़ी, छतरपुर
अध्यक्ष, महिला मंडल शहर, छतरपुर
पंडित श्री नेमीचंद जैन, छतरपुर
डॉ. सुरेश बजाज, छतरपुर
श्री विनय कुमार जैन, टीकमगढ़
सिंघई कमलेश कुमार जैन, टीकमगढ़
श्रीमती संगीता बजाज
(पत्नी श्री हर्ष बजाज) टीकमगढ़
श्री संतोष कुमार जैन, टीकमगढ़
श्री अनुज कुमार जैन, टीकमगढ़
श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

नये सदस्य

श्री ओ.पी. सिंघई, ग्वालियर
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरी, ग्वालियर
श्री सुभाष जैन, ग्वालियर
श्री खेमचंद जैन, ग्वालियर
वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया (असम)

पुण्यार्जक
सौजन्य से

श्री सोहनलाल, मनोज कुमार कासलीवाल
187/32-बी, देवानायगम, शिवापेट, सलेम - 636 002
दूरभाष : 0427-221207 2212107 मोबा.: 093621 00826

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)